1. तैतरीयोपनिषद २.१ 7
2. वेद गानम् एक परिचय 7
वेद अक्षर अशुद्ध होने पर त्रुटि 8
3. श्रीपाद दामोदर सातवेलेकर जी सोलहवें वेद व्याख्यान पर आधारित 9
4. संहिता पाठ की पद्धति। 10
5. मंत्र का व्युत्क्रम आर सरल पाठ। 10
6. अर्धर्चपाठः। 10
7. पदों को चर्चा 10
8. पद पाठ की भिन्नता। 11
9. पदों की तीसरी विशेषता 12
10. पदों की चर्चा 12
11. व्युत्क्रम पद पाठ। 12
12. गायत्री मन्त्र का सीधा पद पाठ यह है। 13
13. इसी वेदमन्त्र का व्युत्क्रम पद पाठ यह है। 13
14. मन्त्र पाठ 13
15. पद पाठ 13
16. व्युत्क्रम पाठ 13
17. मण्डूकप्लुत पद पाठ 13
18. क्रम पाठ 13
19. पञ्च संधि 13
20. माला पाठ के २५ भेद 14
21. रथ पाठ के ११ भेद 14
22. आज वेदों की सुरक्षा कैसी हो? 15
23. अष्टौ विकृतयः 15
24. संहिता मन्त्र 15
25. पदच्छेदपूर्वको मन्त्र पाठः 15
26. पदसंहितालक्षणम् 15
27. पदविच्छेदोऽसंहितः। (प्रतिशाख्येसूत्रे कात्यायनः) सुप्तिडन्तं पदं (अष्टा.) 15
28. पद पाठ 15
29. क्रम लक्षणम् 15
30. क्रम पाठः 15
31. जटा पाठ विकृति लक्षणानि 15
32. जटा प्रथमं लक्षणम् 15
33. द्वितीयं जटालक्षणम् 15
34. जटा लक्षणम् 16
35. जटा 16

36. जटा पाठः......16
37. माला......16
38. क्रम माला लक्षणम्......16
39. क्रम माला......16
40. क्रम माला......16
41. पुष्प माला......17
पुष्प माला लक्षणम्......17
42. शिखा लक्षणम्......18
43. रेखा पाठ......18
पूर्वार्धस्य......18
उत्तरार्धस्य......18
यद्वासर्वस्य मन्त्रस्य......18
44. ध्वज लक्षणम्......19
अत्र विशेषः।......19
45. दण्डपाठः......19
दण्ड लक्षणम्......19
46. रथः......20
रथः लक्षणम्......20
47. द्वि चक्री रथः......21
द्वि चक्री रथः प्रथमः प्रकारो......21
48. द्विचक्री रथः द्वितीयः प्रकारो......22
49. त्रिचक्री रथः......22
50. चतुश्चक्री रथः......22
51. घनः......23
प्रथमं घन लक्षणम्......23
द्वितीयं घन लक्षणाम्......23
52. घनः पाठ......24
53. पञ्चसन्धियुक्तो घनपाठः......24
घन वल्लभः......24
54. पञ्च सन्धियुक्तो जटा पाठः......24
55. अंकीय क्रम के आधार पर विकृति पाठो में पद का स्थान......25
संहिता पाठ......25
सक्रम पद पाठ......25
व्युत्क्रम पद पाठ......25
सक्रम क्रम पाठ......25
व्युत्क्रम क्रम पाठ......25

जटा पाठ (पद क्रम) 25
घन पाठ पद क्रम 25
पञ्च सन्धि पाठ (पद क्रम) 25
पुष्प माला पाठ (पद क्रम) 25
क्रम माला पाठ (पद क्रम) 25
शिखा पाठ (पद क्रम) 25
रेखा पाठ (पद क्रम) 25
ध्वज पाठ (पद क्रम) 26
दण्ड पाठ (पद क्रम) 26
रथ पाठ (पद क्रम) 26
56. ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। ऋग्वेद १.१.१ 26
57. ओ३म् अयं देवाय जन्मने स्तोमो विप्रेभिरासया। ऋग्वेद १.२०.१ 26
58. ओ३म् ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा। ऋग्वेद १०.९७.२२ 27
59. ओ३म् तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। यजुर्वेद ३.३५ 29
60. ओ३म् नमः शम्भवाय च। यजुर्वेद १६.४१ 35
61. ओ३म् सदसि सी दैता। यजुर्वेद तैतरीय १.१.११.२ 36
62. ओ३म् नमस्ताराय नम शम्भवे च। यजुर्वेद तैतरीय ४.५.८.१ 36
63. संहिता पाठ 37
64. वेद गानम् वर्तमान साहित्य में उपलब्धता 37
65. प्रातिशाख्य 38
प्रातिशाख्यों का विषयः 39
उपलब्ध प्रातिशाख्यः 39
तैत्तिरीय प्रातिशाख्य 39
शौनकाचार्यकृत ऋग्वेद प्रातिशाख्य 39
कात्यायनाचार्य कृत वाजसनेयि प्रतिशाख्य 40
तैत्तिरीय प्रातिशाख्य 40
अथर्ववेद प्रातिशाख्य अथवा शौनकीय चतुराध्यायिका 40
66. शुद्ध वेदपाठ के कुछ नियम 41
67. पद पाठ 42
68. पद पाठ के नियम 43
सन्धिविच्छेद 43
अवग्रह का प्रयोग 43
इतिकरण 44
इतिकरण के साथ पद का पुनरावर्तन 44
स्वर परिवर्तन 45
स्वर परिवर्तन के सामान्य नियम 45

69. पद पाठ के नियम पण्डित युधिष्ठर मीमांसक रचित वैदिक स्वर मीमांसा अंश......46
वेदमन्त्र के संहिता पाठ को पदपाठ......46
पद पाठ में व्यवहार्य संज्ञाएँ......47
प्रगृह्य संज्ञा-निम्न पदों की प्रगृह्य संज्ञा होती है। 47
70. संहितापाठ से पदपाठ 48
पद सम्बन्धी सामान्य नियम इस प्रकार है। 48
पदस्वर सम्बन्धी नियम संहितापाठ मे वर्तमान स्वरों को पदपाठ में इस प्रकार परिवर्तित करना चाहिए।......48
प्रगृह्य सम्बन्धी नियम प्रगृह्य संज्ञक पदों को पदपाठ में निम्न नियमों के अनुसार दिखाना चाहिए।......49
रिफित सम्बन्धी नियम 49
अवग्रह सम्बन्धी नियम......50
उपसंहार......52
71. वैदिक वर्ण और स्वर......52
वैदिक वर्ण और स्वर......52
स्वर......52
उदात्त 53
अनुदात्त......53
स्वरित 53
प्रचय......55
निघात 56
72. वैदिक स्वर प्रक्रिया 56
संज्ञा शब्दों में उदात्त......57
समासिक पदों में उदात्त......57
वाक्य में उदात्त 57
उपसर्गों में उदात्त......58
पद में दो उदात्त......58
सर्वानुदात्त या उदात्त रहित पद......58
उदात्त 58
73. सामवेद एक परिचय......58
सामवेद में मन्त्रों की संख्या......59
सामवेद की कौथुमीय शाखा उत्तरार्चिक......59
सामवेद का वाङ्मय 59
सामगान के प्रकार (स्थान की दृष्टि से) 59
सामवेद के अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु। 59
सामवेद का प्रथम मन्त्र निम्न है।......60
सामवेद स्वर परिचय 60
ऋक्-साम के सम्बन्ध की मीमांसा......60

सामवेद में छन्द 61

सामविकार 62

क्रम से सामविकारों को समझते हैं। 62

सामवेद में सामगान के मन्त्रो के भाग 63

सामवेद सामगान में मन्त्र के भाग 63

सामगान 63

सामगान की स्वरलिपि 63

74. वेदमन्त्र का भाष्य महर्षि दयानन्द 64

75. शिक्षा 64

76. शिक्षा ग्रन्थ में इन छः अंगों का विवेचन किया जाता है। 64

77. शिक्षा में तीन प्रकार की रचनाएँ। 65

78. सम्प्रति उपलब्ध प्रातिशाख्य-ग्रन्थः- 65

79. शिक्षा-ग्रन्थ 65

शिक्षा-ग्रन्थों के विषय 65

80. वैदिक वाङ्मय सामवेद एक परिचय 66

सामवेद शाखाएं 69

81. यजुर्वेद एक संक्षिप्त परिचय 69

अग्निचयन 70

राष्ट्रोत्थान हेतु प्रार्थना 70

संप्रदाय 70

शाखाएँ 70

शुक्लयजुर्वेदः 71

शुक्लयजुर्वेद की विषयवस्तु 71

कृष्णायजुर्वेद 72

तैत्तिरीय-संहिता 72

इसके काण्डों के अनुसार वर्ण्य-विषयः 72

मैत्रायणी संहिता 73

काठक संहिता 73

कपिष्ठल (कठ) संहिता 73

अश्वमेधादि याग 74

82. वैदिक वाङ्मय ऋग्वेद एक परिचय 74

ऋग्वेद की शाखा 74

ऋग्वेद के ब्राह्मण 74

83. सामवेद ऋग्वेद 78

84. ऋग्वेद खिल सूक्त 79

खिला का अर्थ (खिल) 79

प्रसिद्ध खिला सूक्त....................79
85. यजुर्वेद का सामान्य परिचय....................80
अन्य नाम....................83

1. तैतरीयोपनिषद २.१

शीक्षां व्याख्यास्यामः । वर्णः स्वरः । मात्रा बलम् । साम सन्तानः । इत्युक्तः शीक्षाध्यायः ॥

भाषार्थः नारायण स्वामी

(शिक्षां व्याख्यास्यामः) अब शिक्षा की व्याख्या करेंगे । (वर्णः) अकारादि अक्षर स्वरः उदात्त, अनुदात्तादि स्वर मात्राः ह्रस्वादि मात्राएं बलम् आभ्यन्तर और बाह्य प्रयन्त साम मधुरता से शब्दों का उच्चारण सन्तानः सन्धि - अक्षरों का मेल । इति इस प्रकार शिक्षाध्यायः शिक्षा - अध्याय उक्तः कहा गया ।।१।। शिक्षा पंच शिक्षा और उसके बाद ५ वाक्य और इस उपनिषद्वाक्य में हैं॥

2. वेद गानम् एक परिचय

जब कोई विशेष यज्ञ या संस्कार करना हो तो पवित्रीकरण आचमन स्वस्तिवाचनम् व शान्ति प्रकरणं भी कर लेना चाहिए और उसके उपरांत पूर्णाहुति से पहले तक का दैनिक यज्ञ पहले करना चाहिए। फिर संस्कार का प्रधान यज्ञ कर, गायत्री मंत्रों से आहुति दे कर पूर्णाहुति करनी चाहिए। सभी क्रियाएं मन्त्र उच्चारण करने के उपरान्त करते है। मन्त्र के माध्यम से किया जाने वाला क्रिया कलाप व विचार यज्ञ पर केन्द्रित होनें चाहियें। ब्रह्म यज्ञ करते समय दृष्टि नासिका के अग्र भाग पर व देव अर्थात साकल्य यज्ञ करते समय दृष्टि अग्नि की धाराओं पर होनी चाहिए। वेद मन्त्रों का त्रुटि रहित पाठ करने के लिए वेद मन्त्र उच्चारण पुस्तिका अवश्य पढ़ें। क्रिया करते समय भावना भाषार्थ अनुकूल पवित्र रखें। परमात्मा जिस भाषा में मानव के कर्म अन्तःकरण में लेखनीबद्ध करता है। उन्हें चित्त की वृत्तियां कहते हैं। और वह अन्तःकरणी भावना के रूप में उपजती रहती हैं।

वेद गान के भिन्न भिन्न प्रकार हैं। पंडित दामोदर सातवेलेकर जी के सोलहवें वेद व्याख्यान को प्रमाणित मान करके विभिन्न पाठों का निर्माण करने का यह एक प्रयत्न है उन्होने अपने सोलहवें वेद व्याख्यान में संहिता पाठ, पद पाठ सक्रम, पद पाठ व्युत्क्रम, क्रम पाठ सक्रम, क्रम पाठ व्युत्क्रम, पञ् च संधि पाठ, जटा पाठ, शिखा पाठ, क्रम पाठ, पंच सन्धि क्रम पाठ, पञ् च संधि जटा पाठ, पुष्प माला पाठ, क्रम माला पाठ, रेखा पाठ, सर्वस्यय मन्त्रस्य रेखा पाठ, दण्ड, ध्वज, रथ पाठ, द्वि चक्री पाठ, त्रि चक्री पाठ, चतुष चक्री रथ पाठ। कहीं कहीं पर अनुस्वार के परिवर्तन को उसके शब्द न् म् ण् ञ् ङ् रूप में ही दर्शाया गया है। यजुर्वेद में अधिकतर परसवर्ण सन्धिः का प्रयोग होता है किसी अक्षर के अंतिम शब्द को अनुस्वार में परिवर्तित न करके उसके नासिक्य न् म् ण् ञ् ङ् रूप में लिपिबद्ध किया जाता है। ऋग्वेद में अनुस्वार को दोनों प्रकार से लिपिबद्ध किया जाता है। सामवेद के मन्त्रों पर जो ◌१◌२◌३ आदि संख्या डली हुई है, ये अंङ्क क्रमशः संख्याएँ उदात्त, स्वरित और अनुदात्त के चिह्न हैं। ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में अनुदात्त का चिह्न नीचे रेखा से उसके लिए सामवेद में अंक ◌१ ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में स्वरित का चिह्न। रेखा से सामवेद में अंक ◌२ ऋग्वेद आदि अन्य वेदों में उदात्त पर कोई चिह्न नही होता वह सामवेद में ◌३ दिखाया जाता है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब वेदमन्त्रों का गान गाते थे तो एक पंक्ति में सिंहराज, एक पंक्ति में मृगराज, एक पंक्ति में सृपराज एक पंक्ति में नाना पशु पक्षी और एक पंक्ति में शिष्यगण विद्यमान हो करके उस गान को श्रवण करते थे।

पूज्यपाद गुरुदेव ने वेदों के विषय में इतना उच्चारण किया है कि जिसे सहस्रों पृष्ठों में लिपिबद्ध करना भी कठिन है। पूज्यपाद गुरुदेव वेद पाठ करते समय संस्कृत व देवनागरी भाषा में प्रवचन करते समय शब्दों को इतनी उत्तमता से उच्चारण करते हैं कि जिसको शब्दों में व्यक्त नही किया जा सकता। उनकी उच्चारण ध्वनि में आप शब्द के अन्तर्गत प्रत्येक अक्षर को जैसे स्वर, स्वर सहित व्यञ्जन, स्वर रहित व्यञ्जन, अनुस्वार व वैदिक ध्वनि उच्चारण चिह्न इत्यादि को पृथक पृथक अनुभव कर सकते हैं। दो शब्दों के मध्य में अंतराल को भी आप भिन्न भिन्न अनुभव कर सकते हैं।

जैसे ज्ञ देवनागरी वर्णमाला में 'ज्' और 'ञ' के योग से इसी तरह क्ष 'क्' व 'ष' बना हुए अक्षर है।

वेद पाठ करते समय अंतराल को अवश्य ध्यान रखें। जैसे इदन्न मम्, ही बोलें इदन्नमम् सही उच्चारण नही है। मन्त्र उच्चारण

करते समय शब्द ध्वनि, उनके अन्तराल व स्वरों का बोध उन श्रोताओं व स्वयं को अवश्य ही होना चाहिए जो ध्यान पूर्वक श्रवण कर रहें हैं। प्रत्येक मन्त्र के आरम्भ में ओ३म् रुपी सूत्र अवश्य ही उच्चारण करें।

वेद का उच्चारण, वाचन, पठन पाठन व गान गाने वालों को संस्कृत की वर्णमाला, जो कि स्वर, व्यञ्जन, अनुस्वार व वैदिक ध्वनि उच्चारण चिह्न मिलकर बनी है, वेद पाठ के लिये सही उच्चारण का ज्ञान अवश्य ही होना चाहिए।

वेद गायन ध्वनि व समय अन्तराल की दृष्टि से

ह्रस्व अल्पकालीन स्वर है। इसका उच्चारण एक मात्रिक होता है अर्थात जितने समय में हाथ की कलाई की नाड़ी एक बार धड़कती है उतने समय में इसका उच्चारण करना चाहिए। दीर्घ लिंबे समय तक का उच्चारण द्विमात्रिक होता है अर्थात जितने समय में कलाई की नाड़ी दो बार धड़कती है उतने समय में इसका उच्चारण करना चाहिए। प्लुत अधिक लिंबे समय तक इसका उच्चारण त्रिमात्रिक होता है अर्थात जितने समय में हाथ की कलाई की नाड़ी तीन बार धड़कती है उतने समय तक उच्चारण करना चाहिए। जैसे ओ३म्। जो शब्द जैसे लिखा हो उसे वैसा ही बोलें।

वेद पाठ की गायन शैली की परम्परागत वैदिक विद्यालयों में धैर्य और कठिन परिश्रम के साथ विद्या प्राप्त की जा सकती है।

वेद गान के भिन्न भिन्न प्रकार हैं। पंडित दामोदर सातवेलेकर जी के सोलहवें वेद व्याख्यान को प्रमाणित मान करके विभिन्न पाठों का निर्माण करने का यह एक प्रयत्न है। जिसमें उन्होंने पच्चीस प्रकार के पाठों का वर्णन किया है जैसे संहिता पाठ, उदात्त अनुदात्त पाठ, सक्रम पद पाठ, व्युत्क्रम पद पाठ, क्रम पाठ, जटा पाठ, घन पाठ, शिखा पाठ, पञ्च सन्धि पाठ, माला पाठ, क्रम माला पाठ, ध्वज पाठ, दण्ड पाठ, रेखा पाठ, द्वि चक्री रथ पाठ इत्यादि।

सामवेद में आरण्यं गानम्, ग्राम गानम्, उह गान व उह्य गान भी गाया जाता है।

कृष्णादत्त जी शृङ्गी ऋषि महाराज द्वारा कुछ अन्य पाठ भी वर्णित किए गए हैं। कृतिकि पाठ, विसर्ग पाठ, मधु पाठ, उदात्त अनुदात्त, माला पाठ। मल्हार गान व दीपमालिका गान आदि के गायन करने वाले अभी समाज के स्तर पर प्राप्त नहीं होते क्योंकि यह विद्या प्राणों के परस्पर मिलान करने से ही सिद्ध होती है। जो कि हिमालय की कन्दराओं में आदि ऋषियों से प्राप्त की जा सकती हैं।

वेदों में स्वरों और छंदो, स्वर और व्यञ्जन सहित गायन की विद्या की मेरी जानकारी वैदिक छात्रों की दृष्टि में ही अभी प्रारम्भिक अवस्था में है यह लेख एक साधारण मानव के लिए सुलभ इस सूक्ष्म विषय की तकनीकी चर्चा करने के लिए बनाया जा रहा है।

पदों को संधि सहित या संधि रहित करने के उपरान्त पूर्ववर्ती शब्द के अन्तिम अंश के व परवर्ती शब्द के प्रथम अंश में शब्दों के स्थान परिवर्तन के कारण वैदिक व्याकरण की दृष्टि से उनमें परिवर्तन हो जाता है। वेद पाठ के अनुसार यह परिवर्तन अनुदात्त, उदात्त और स्वरित चिह्नों में भी आता है। इसे अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए।

महर्षि पाणिनी और महर्षि पतंजलि ने अपने महाभाष्य में इनके मुख्य मुख्य नियमों का समावेश किया है। इन्होने इस पूर्ण समुद्र रुपी विज्ञान को जाना है।

आप अक्षर स्तर पर आये परिवर्तन को तो अभ्यस्त से स्वयं भी कर सकते हैं लेकिन स्वरों में आए परिवर्तन को आपको विद्यालय में आचार्यों से सीखना पड़ेगा।

वेद अक्षर अशुद्ध होने पर त्रुटि

पुरातन काल में जब ऋषि मुनि एकान्त स्थलियों में विद्यमान होते, एक समय बेटा! मुझे स्मरण है, एक समय हम देखो, अपने आचार्य के समीप विद्यमान हो करके वेदमन्त्रों का उद्गीत गा रहे थे, वेद का अध्ययन कर रहे थे, जब वेद का मन्त्र अक्षर से अशुद्ध हो गया, तो आचार्य ने कहा नही पुत्र! अमृतां ब्रह्मे भूः भुवः कहो। मानो देखो, यदि यजूंषि का पठन पाठन कर रहे हो, तो ओ३म् भूः कहना चाहिए तीन श्वासों के द्वारा तो वह जो उसमें वेदमन्त्र में अशुद्धि हो गई है, उसमें मानो

देखो, एक प्रहात हो गया है मानो देखो, उसका शुद्धिकरण हो करके, एकोकीरण हो जाता है और यदि तुम्हें मानो देखो, यदि अमृतं देखो, ऋग में इस प्रकार की अशुद्धि आ जाएं, तो ओ३म् भुवः ऐसा उच्चारण करना चाहिए और साम गान में यदि अशुद्धि आ जाएं तो ओ३म् स्वः कह करके, हूत करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, तीन तीन श्वासों के द्वारा, एक एक श्वास में मानो देखो, वह तीन सत में उद्गीत गाना चाहिए। तो मुनिवरों! देखो, वेदमन्त्रों की अशुद्धियों की पूर्ति हो जाती है। देखो, यदि अमृतां देव अमृता बेटा! वह पूर्ति नही हो पाती। तो विचार आता रहता है मैं सम्बन्ध में व्याकरण की पद्धति में नही ले जा रहा हूँ यह तो पठन पाठन की पद्धतियां हैं, विचार केवल यह कि गीत गाना चाहता हूँ। मुनिवरों! देखो, यदि कोई भी साधन न हो तो ओ३म् स्वः, ओ३म् मह, ओ३म् जनः, ओ३म् तपः उच्चारण करते हुए पुनः आहुति देनी चाहिए जिससे हमारी वाणी देखो, शब्द अन्तरिक्ष, मानो देखो, हमारा सब उसमें शुद्धिकरण हो जाएं।

3. श्रीपाद दामोदर सातवेलेकर जी सोलहवें वेद व्याख्यान पर आधारित

वेद की रक्षा की रक्षा का प्रश्न आज भी हमारे सामने है। पर आज केवल वेद के अक्षरों की सुरक्षा उतनी कठिन नहीं है, जितनी प्राचीनकाल में कठिन थी। आज एक बार अच्छा और शुद्ध कंपोज तैयार करके उसके स्टीरियो ब्लॉक्स बनवाये, अथवा उसी कंपोज से इलक्ट्रो के ब्लॉक्स बनवाये, किंवा छपने के पुस्तक के पन्नों से फोटोग्राफी की सहायता से 'ब्लाक' बनवाये, तो अक्षर ह्रस्व दीर्घ प्लुत उदात्तादि स्वर व्यंजन मात्रा, पद आदि की उत्तम सुरक्षा हो सकती है। आज जो युक्तियां हमारे पास हैं, उनके द्वारा यह सब हमारे लिये आसान है। सम्पूर्ण ऋग्वेद के ऐसे ब्लाक ५०,०००) रु० के व्यय से बन सकते हैं और शेष तीनों वेदों के ब्लाक भी इतने ही व्यय से हो सकते हैं। भाज इतना व्यय कोई नहीं करता है, यह वैदिक धर्मियों की उदासीनता का दोष है। पर चारों वेदोंकी रक्षाके लिये एक लाख रु. का व्यय करना कोई बड़ी भारी बात नहीं है।

स्वध्याय मण्डल ने शुद्ध वेद छापे हैं, और पृष्ठों के फोटो लेकर ब्लाक करवाने की मनीषा रखी है। हमारे पास इस कार्य के लिये ३०,०००) की रकम आ भी गयी है, पर यह अपूर्ण है इसलिये यह कार्य नहीं हो सका। इस विषय में कई लोग यह पूछते हैं कि, ब्लाकों में अशुद्धि रही, तो फिर क्या किया जायगा? इसका सरल उत्तर यह है कि, प्रथम पुस्तक शुद्ध होने पर ब्लाकों में अशुद्धि नहीं होगी। परन्तु मनुष्य की आंख हैं, यदि प्रयत्न करने पर भी ऋग्वेद के हजार ब्लाकों में से ४० ५० ब्लाकों में कुछ अशुद्धि प्रतीत हुई, तो उन ४० ५० ब्लाकों को तोडकर, नये शुद्ध ब्लाक बनवाये जा सकते हैं। यह कोई ऐसी बात नहीं कि, जो न होने वाली है और वेद जैसे जगद्वन्ध धर्म पुस्तक की सुरक्षा के लिये ऐसा ही उपाय करना चाहिये। जो आज सहज ही से हो सकता है कोई करे या न करे, यह समझने न समझने की बात है। ऐसी सुविधा प्राचीन काल में नहीं थी। आज दूसरी भी एक सुविधा है, वह यह कि शुद्ध कंपोज करके उस पर हजारों ग्रन्थ जैसे आज छापे जा सकते हैं, वैसी बात प्राचीन समय में नहीं थी। एक एक ग्रन्थ हाथ से लिखने में तथा उसे शुद्ध करने में जो कष्ट होते थे, वे कल्पना से भी आज नहीं जाने जा सकते। ऐसे संकटों के समय में प्राचीन ऋषि मुनियों ने वेद की सुरक्षा की, यह कार्य उन्होंने कितने परिश्रमों से किया होगा, यह बात हर एक वैदिक धर्मी मनुष्य को आज भी जानने योग्य है। इस विषय में वेद की सुरक्षाके लिये प्राचीन ऋषियों ने कैसे यरन किये थे, इस विषय में प्राचीन पुस्तकों में कुछ वचन मिले हैं, वे इस लेख द्वारा पाठकों के सन्मुख रखने हैं। इससे पाठकों को स्पष्ट रीति से पता लग जायगा कि, वेद रक्षा के लिये कितना प्रयत्न किया जाता था और वेद के अक्षरों की सुरक्षा कितनी मेहनत से ऋषियोंने की थी। देखिये

भगवान् संहितां प्राह, पदपाठं तु रावणः। बाभ्रव्यर्षिः क्रमं प्राह, जटां व्याडीरवोचत ॥१॥

मालापाठं वसिष्ठश्च, शिखापाठं भृगुर्व्याधात्। अष्टावक्रोऽकरोद्रेखां, विश्वामित्रोऽपठद् ध्वजम्।

दण्डं पराशरोऽवोचत्, कश्यपो रथमब्रवीत्। घनमत्रिर्मुनिः प्राह, विकृतीनामयं क्रमः ॥३॥

मधुशिक्षायां मधुसूदनमुनिः

"भगवान् ने वेदों की संहिता कही, रावण ने पद पाठ किया, बाभ्रव्य ऋषि ने क्रम पाठ का प्रचार किया, (१) जटा पाठ न्याडी ने शुरू किया, (२) वसिष्ठ ऋषि ने मालापाठ किया, (३) भगु ऋषि ने शिखा पाठ शुरू (४) अष्टावक्र ऋषिने रेखापाठ

की पद्धति शुरू की, (५) विश्वामित्र ऋषि ने ध्वज पाठ शुरू किया, (६) पराशर ऋषि ने दण्ड पाठ किया, (७) कश्यप ऋषि ने रथपाठ की प्रणाली शुरू की, (८) भत्रि मुनि ने घन पाठ शुरू किया। इस तरह संहिता, पद और कम के आश्रय से इन पाठ विकृतियोंके पाठोंकी प्रणाली इन आठ ऋषियी ने शुरू की। यह सब करने का कारण यही था कि, ऐसे पाठ होने से और पदों के आगे पीछे पठन होने से एक भी अक्षर आगे पीछे नहीं किया जा सकता। यदि अक्षरों का हेर फेर हो जाय, पद आगे पीछ बन जायगे, तो किसी न किसी समय इन विकृतियों के पाठों में वह हेर फेर करने वाला पकड़ा ही जायगा और उसकी निन्दा सब वेदपाठियों में हो जायगी। इस तरह वेद पाठकी रक्षाका यत्न इतने यत्नसे इन ऋषियों ने किया था।

4. संहिता पाठ की पद्धति।

संहिता पाठकी पद्धति भी एक विशेष पद्धति है, जो इस समय महाराष्ट्र में ही उत्तम रीति से प्रचलित है। यद्यपि यह लुप्तप्रायसी हो रही है, तथापि महाराष्ट्र में इस समय में भी दशग्रन्थी बनपाठी विद्वान् सौ डेढ सौ मिल सकते हैं। इतने विद्वान् अन्य प्रान्तोंमें नहीं हैं। ऋग्वेदको आमूलाग्र महाराष्ट्र के लिये भूषण है। पर यह भूषण आगेके ५० वर्षों में रहेगा, ऐसी भाशा हमें नहीं है।

5. मंत्र का व्युत्क्रम आर सरल पाठ।

संहिता पाठ में दो प्रकारका पाठ किया जाता है। एक सरल मंत्रों को कण्ठ करना और सरल क्रम से पढना। यह तो सरल है और ऐसा मरल पाठ करने वाले बहुत मिलते भी है। परन्तु इसमें मंत्रों का व्युत्क्रम करनेवाले बहुतही थोडे होते हैं। यह कार्य बड़ा कठिन है और मंत्रों की अच्छी उपस्थिति के बिना तथा विशेष स्मरण शक्ति के बिना यह व्युत्क्रम, पाठ नहीं हो सकता।

मंत्रों का सरल क्रमशः पाठ करने को 'संहितापाठ' कहते हैं, और मनो को विरुद्ध क्रम से बोलने को 'संहिता का किया, व्युत्क्रम पाठ' कहते हैं। जैसा ऋग्वेद के प्रथम सूक्तमें ९ मंत्र हैं, उनको १, २, ३, ४, ५, ६, ७,८,९ ऐसे कम से पाठ करने का नाम 'संहितापाठ' है और ९, ६, ७, ६, ५, ४, ३, २, १ ऐसे उलटे क्रम से पाठ करने का नाम 'संहिता का व्युत्क्रमपाठ' है। यह व्युत्क्रम पाठ बहुत ही अद्वितीय स्मरणशक्ति वाले ही कर सकते हैं। हर एक से यह कार्य नहीं हो सकता। एक सूक्त के मंत्र भी उलटे क्रम से बोलना सहज नहीं हैं, फिर अनुवाक्, अध्याय, मण्डल आदि के मंत्रों को उलटे क्रम से बोलना कितना कठिन होगा, इसका विचार विद्वान लोक ही कर सकते हैं। परन्तु हमने ऐसे व्युत्क्रम पाठी विद्वान देखे हैं और ऋग्वेद का मुद्रण जिस अद्वितीय विद्वान के अधिष्ठातृत्व में हो रहा है, वे वेदमूर्ति सखारामभटजी ऐसे ही उत्तम वेद के व्युत्क्रम पाठी विद्वान् हैं। सूक्त के सूक्त जैसे सरल क्रम से वे बोलते हैं, वैसे ही उलटे क्रम से भी विना प्रमाद किये बोलते है!!!

6. अर्धर्चपाठः।

पाठ में और एक पद्धति है, आधा मंत्र एक बोले और अगला आधा मंत्र दूसरा बोले। ऐसा करने के समय पहिले का आधा मंत्र समाप्त होने के पूर्व ही दूसरे को अगले आधे मंत्र का प्रारम्भ करना होता है। इस तरह का पाठ करने के लिये आधे मंत्र एक एक छोडकर स्मरण में रखने कण्ठ करने वाले इस समय महाराष्ट्रीय ही हैं। यह एक पड़ते हैं। बिना ऐसा स्मरण रहे, अगला चरण स्मरण नहीं हो सकता।

इस तरह संहिता पाठ में क्रम और व्युत्क्रम तथा अर्धर्च। पाठ ये तीन प्रकार के पाठ भाज भी महाराष्ट्र में प्रचलित हैं। पद पाठ की पद्धति। मंत्रों का पदपाठ है, यह सब जानते हैं, परन्तु मंत्रपाठ और पद पाठ में थोडा हेर फेर भी है। जो 'पदसमूह' एक बार किसी पूर्व मंत्र में आया होता है, वह पद समूह फिर पद पाठ में नहीं बोला जाता। इसको 'गलित पदसमूह' कहते हैं। जिस समय वेद का पद पाठ बोला जाता है, उस समय इन दुवारा आये गलित पद समूहों को बोलते नहीं हैं।

7. पदों को चर्चा

इस नियम को बडी सावधानी से स्मरण रखना पड़ता है। संहिता तो सब मंत्रों की यथा क्रम बोली जाती है, परन्तु पद पाठ

में द्विरावृत्त अर्थात् दुबारा आया पद समूह बोला नहीं जाता। इससे एक लाभ यह होता है कि दुबारा, तिबारा कौन से पद कहां आये हैं, वे संपूर्ण संहिता में कितनी बार आ गये हैं, इसका स्मरण इस परिपाटी से सहज ही से होता है। इसलिये जो पदपाठी विद्वान होते हैं, उनको पुनरुक्त मंत्र भागों का पता उत्तम रीति से रहता है। पद पाठ में दूसरी एक विशेषता है। संहिता पाठ के, क्रम से, पद पाठ का क्रम, क्वचित् स्थान पर विभिन्न होता है, वहां कुछ व्युत्क्रमसा होता है, जैसे

8. पद पाठ की भिन्नता।

संहिता पाठ	पद पाठ	क्रमांक
इन्द्रावरुण वामहं इन्द्रावरुणा।	इन्द्रावरुणा। वां। अहं।	ऋग्वेद १.१७.७
न्याविध्यत्।	नि। अविध्यत्।	ऋग्वेद १.३३.१२
न्यावृणक्।	नि। अवृणक्।	ऋग्वेद १.१०१.२
अगादारैगु अगात्।	अरैक्। उँ इति।	ऋग्वेद १.११३.२
अभ्यादेवं।	अभि। अदेवं।	ऋग्वेद २.२२.४
आसता सचन्तां।	असता। सचन्तां।	ऋग्वेद ४.५.१४
शुनश्चित् शेपं।	शुनःशेपं। चित्।	ऋग्वेद ५.२.७
स्वधितीव।	स्वधितिः। इव।	ऋग्वेद ५.७.८
वरुणेळासु।	वरुण। इळासु।	ऋग्वेद ५.६२.५
वरुणेळासु।	वरुणा। इळासु।	ऋग्वेद ५.६२.६
इत्था देव।	इत्था। देवा।	ऋग्वेद ५.६७.१
धिष्णयेमे।	धिष्णये इति। इमे इति।	ऋग्वेद ७.७२.३
अश्वेषितं।	अश्वऽइषितं।	ऋग्वेद ८.४६.२८
रजेषितं।	रजःऽइषितं।	ऋग्वेद ८.४६.२८
शुनेषितं।	शुनाऽइषित।	ऋग्वेद ८.४६.२८
नकिरादेव।	नकिः। अदेवः।	ऋग्वेद ८.५९.२
षड्भूम्या ददे।	सत्। भूमिः। आ। ददे।	ऋग्वेद ६.६१.१०
बृहस्पते रवथेन।	बृहस्पतेः। रवथेन।	ऋग्वेद ९.८०.१
नरा च शंसं।	नराशंसं। च।	ऋग्वेद ९.८६.८२
नरा वा शंस।	नराशंसं। वा।	ऋग्वेद १०.६४.३
चित्कंभनेन।	चित्। स्कंभनेन।	ऋग्वेद १०.६४.३

इस तरह वेदों में क्वचित् संहिता पाठ से पद पाठ भिन्न है, केवल व्याकरण से ही यह पद पाठ सिद्ध नहीं हो सकता। जो पाठक व्याकरण के नियम जानते होंगे, उनको कहने की आवश्यकता नहीं है कि, किस तरह यह पदपाठ भिन्न है। इसीलिये वैदिकों को संहिता पाठ के समान ही पदपाठ भी कण्ठ ही करना होता है। और वेदपाठी संहिता पाठ के समान पद पाठ

को भी कण्ठ ही कर देते हैं।

9. पदों की तीसरी विशेषता

पद पाठ की दो विशेषताएं पूर्वस्थान में बतायी है। (१) एक तो उस पद पाठ में कुछ पद नहीं रहते, जो द्विबार आते हैं, और (२) पदपाठ भिन्न भी होता है। (३) तीसरी विशेषता यह है कि संहिता पाठ से पद पाठ के स्वर भिन्न होते हैं। पद होते ही स्वर भेद होता है। इसलिये पद पाठ को उतने ही प्रयत्न से कण्ठ करना पड़ता है कि, जितने यत्न से संहिता को कण्ठ किया जाता है।

10.पदों की चर्चा

पद पाठ कण्ठ होने के पश्चात् जैसी संहिता की चर्चा होती है, वैसी ही पद पाठ भी चर्चा होती है। चर्चा का अर्थ है मुखसे बोलना। मन्त्रकी चर्चा दो प्रकार की पूर्व स्थान में कही है। आमने सामने चर्चा करने वाले बैठते हैं, और एक संघ वाले एक मन्त्र बोलते हैं और दूसरे सामने वाले दूसरा बोलते हैं। अथवा आधा मन्त्र एक संघ के लोग बोलते हैं, और द्वितीयार्ध को दूसरे संघवाले बोलते हैं। इस तरह अध्यायों के अध्याय बिना प्रमाद किये बोलते हैं। इसमें इस बातकी कठिनता होती है कि, पहिले संघ का वाक्य समाप्त होने के पूर्व ही दूसरे संघ का प्रारम्भ होना चाहिये। आगे के मन्त्र का अथवा मन्त्रार्ध का प्रारम्भ करने योग्य मंत्रों का स्मरण रहना ही पाठ शक्ति की विशेषता है।

इसी तरह पदों की चर्चा होती है। एक संघवाले एक पद बोलेंगे और दूसरा संघ दूसरा अगला पद बोलेंगे, परन्तु पहिलेका समाप्त होने से पहिले ही दूसरे को अपना पद बोलना चाहिये। इसके लिये एक पद छोड़कर दूसरा बोलने का अभ्यास का होना चाहिये। तब इस चर्चा में सफलता मिलती है। चर्चा कैसी बोली जाती है, यह देखिये

वेद पाठी विद्वानों का एक संघ	वेद पाठी विद्वानों का दूसरा संघ
तत् १	२ सवितः
वरेण्यं ३	४ भर्गः
देवस्य ५	६ धीमहि
धियः ७	८ यः
नः ९	१० प्रचोदयात्

इससे पता चल सकता है कि, इस चर्चा पठन पद्धति में हर एक को एक एक पद छोडकर अगला पद बोलने की स्मरण शक्ति रहनी चाहिये। हमने ऐसे वेद राठी देखे हैं कि जो संपूर्ण संहिता का पद पाठ बीच के एक एक पद को त्याग कर विना प्रमाद किये बोलते जाते हैं !! और ऐसे पदपाठी विद्वान् महाराष्ट्र में इस समय है। स्मरण रहे कि विशेष प्रयत्न के विना और विशेष आयास करने के विना यह पद पाठ इस तरह कण्ठ होना कठिन है।

11.व्युत्क्रम पद पाठ।

पद पाठ को भी व्युत्क्रम से अर्थात् उलटे क्रमसे बोलने वाले होते हैं। हमारे स्वाध्याय मण्डल के वे० मू० सखा राम भट्ट जी ऐसा उलटे क्रम से पद पाठ बोलते हैं। सम्पूर्ण ऋग्वेद का पद पाठ अन्त से आदि तक कहने वाला हमने और एक और वेद पाठी विद्वान देखा था। वह चाहे संहिता के अन्त से चाहे किसी मण्डल के अन्त से चाहे किसी सूक्त के अन्त से मन्त्र तथा पद पाठ बिना प्रमाद किये बोलता था। इस समय वह गुजर चुका है। हमारे ही पितृ व्यकुल का वह वेद पाठी था। इसको छोड़कर तथा हमारे वेद मूर्ति सखा राम भट्ट जी को छोड़ कर ऐसा व्युत्क्रम पद पाठी हमने दूसरा नही देखा। बहुधा ऐसा वेद पाठी मिलना असम्भव ही है, क्योंकि विशेष स्मरण शक्ति न होने से यह होना सर्वथा असंभव है।

12.गायत्री मन्त्र का सीधा पद पाठ यह है।

तत्। सवितुः। वरेण्यं। भर्गः। देवस्य। धीमहि। धियः। यः। नः। प्रचोदयात्। प्रचोदयादिति प्र चोदयात्॥

13.इसी वेदमन्त्र का व्युत्क्रम पद पाठ यह है।

प्रचोदयात्। नः। यः। धियः। धीमहि। देवस्य। भर्गः। वरेण्यं। सवितुः। तत्॥

गायत्री मन्त्र तो हर कोई जानता है, पर उसका उलटा पद पाठ बोलना कितना कठिन है, यह पाठक ही स्वयं देख सकते हैं। यदि एक मन्त्र का उलटा पद पाठ बोलना कठिन है, तब तो सूक्तों का उलटा पद पाठ बोलना तो इससे शत गुणा कठिन है, यह हर कोई जान सकता है और एक पद छोड़कर बोलते जाना तो उससे भी कठिन है। पर ऐसे विद्वान आज भी मिलते हैं व्युत्क्रम पाठी मिलना ही दुष्कर हुआ है, सरल पाठी तो इस समय भी हैं।

इस समय तक जो विभिन्न पाठ बताये, उनको फिर दुहराते हैं।

14.मन्त्र पाठ

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान।

15.पद पाठ

अग्ने। नय। सुपथा। राये। अस्मान्। विश्वानि। देव। वयुनानि। विद्वान।

16.व्युत्क्रम पाठ

विद्वान। वयुनानि। देव। विश्वानि। अस्मान्। राये। सुपथा। नय। अग्ने।

17.मण्डूकप्लुत पद पाठ

अग्ने। ....। सुपथा।......।अस्मान्।......।

......। नय।.....। राये।.....। विश्वानि।

देव।.................। विद्वान।.....।

।......। वयुनानि।...............॥

यह पाठ पदों की चर्चा बोलने के समय बोला जाता है जो पूर्व स्थल में बताया जा चुका है। इस चर्चा में एक एक पद का त्याग करके अगला पद बोला जाता है। यह इतना जल्दी बोलते हैं कि उसका वर्णन ही नही हो सकता। एक संघ १,३,५,७,९ ये पद बोलेंगें और दूसरा संघ २,४,६,८ ये पद बोलेंगें। बीच गलित या पुनरुक्त पद छोड़ने होते हैं, सामासिक पद तोड़कर बोले जाते हैं जैसा रत्नधातमं इति रत्न धा तमं पुरोहितं इति पुरःऽहितं इ.।

इसी तरह सब पद बोलते हैं और इतनी जल्दी में बोलते हुए एक भी गलती नहीं होती, यह आश्चर्य है!!!

इसके नंतर क्रम पाठ, जटा पाठ, माला पाठ, शिखा पाठ, रेखा पाठ, ध्वज पाठ, दण्ड पाठ, रथ पाठ, घन पाठ, ये नौ पाठ वेदमन्त्रों के पदों के सरल उलटे क्रम से होते हैं। क्रम पाठ के ही आश्रय से आगे के ८ भेद बनते हैं। इन सब पाठों में सबसे पूर्वोक्त संहिता तथा पद पाठ होने के पश्चात यही क्रम पाठ कण्ठ होता है। यह इस तरह होता है

18.क्रम पाठ

अग्ने नय। नय सुपथा। सुपथा राये। राये अस्मान्। अस्मान विश्वानि। विश्वानि देव। देव वयुनानि। वयुनानि विद्वान। विद्वानिति विद्वान॥

अन्तिम पद इति रखकर दो बार बोला जाता है।

यही क्रम पाठ आगे के आठों विकृतियों का आधार है। यहां क्रम से दो दो पद बोले जाते हैं। उक्त स्थान क्रम पाठ और आठ विकृतियों के नाम दिये हैं। परन्तु प्रत्येक विकृति में कई भेद भी हैं।

19.पश्च संधि

उक्त विकृति बनने के लिए पश्च संधि करने की अत्यन्त आवश्यकता होती है। पश्च संधि किये बिना ठीक तरह विकृति बोलना

असम्भव है। पञ्च संधि का नमूना यह है

धियो यः। इन दो पदों के पञ्च संधि ऐसे होते हैं धियो यः। यो यः। यो धियः। धियो धियः। धियो यः।

दो पदो का परस्पर व्यवहार पांच ही प्रकार से हो सकता है। वेद के प्रत्येक दो पदों का इस तरह संधि स्मरण रखना पड़ता है। इससे वेद का पद आगे पीछे कैसा भी हुआ, तो उसका ठीक ठीक संधि कैसा होता है, यह जाना जा सकता है। इसी कारण वेद का पद आगे पीछे न होता हुआ अपने स्थान पर सुरक्षित रहता है। पाठक इस प्रयत्न को ठीक तरह समझें।

जटा पाठ में दो भेद हैं, ऐसा सरल जटा पाठ और दूसरा पञ्च संधि युक्त जटा पाठ।

माला पाठ के दो भेद होते हैं, एक क्रम माला और दूसरी पुष्प माला। इसका पाठ विधि आगे बताया है। माला के और २५ भेद कहे हैं

अवसानाद्यावसानान्तं क्रमादुत्क्रमणं पठेत्। मालाख्यां विकृतिं धीमान् संहितायाः सदा पठेत्। पञ्चविंशत्प्रभेदां हि मालाख्यां विकृतिं विदुः। पंच विंशति भेदाश्च मालायाः संभवन्ति हि॥

20.माला पाठ के २५ भेद

माला नामक वेदविकृति के २५ भेद होते हैं। जिनके नाम ये हैं।

१, पद २ पदव्युत्क्रम, ३ क्रम, ४ जटा, ५ शिखा, ६ संहितापद, ७ संहिताक्रम, ८ संहिता जटा, ९ संहिता शिखा, १० पदक्रम, ११ पद जटा, १२ पद शिखा, १३ क्रम जटा, १४ क्रम शिखा, १५ जटा शिखा, १६ संहिता पद क्रम, १७ संहिता क्रम जटा, १८ संहिता जटा शिखा, १९ संहिता पद क्रम जटा, २० पद जटा शिखा, २१ क्रम जटा शिखा, २२ संहिता पद क्रम जटा, २३ संहिता क्रम जटा शिखा, २४ संहिता पद क्रम जटा शिखा, २५ माला। माला के दो भेद हमे मालूम हैं यहां २५ भेद लिखे हैं, इसका किसी को पता नही हैं। पाठ को में से किसी को अथवा किसी अन्य विद्वान को इन भेदों का विधि मालूम हो, अथवा किसी अन्य विद्वान को इन भेदों का विधि मालूम हो, अथवा किसी के पास कोई ग्रन्थ प्राचीन लिखित हो, तो उसका पता हमें चाहिए। वल्ली नामक विकृति के इसी तरह २५ और भेद इसी लिखित ग्रन्थ में लिखे हैं। इनके नाम ग्रन्थ जीर्ण होने से हस्तगत नही हुए। इनका भी पता किसी को हो तो हम जानना चाहते हैं। रथ के विषय में निम्न लिखित पंक्तियां मिलती हैं

21.रथ पाठ के ११ भेद

वल्ल्याः क्रमः समाख्यातो जटाख्यातं पदद्वयम्। क्रमवत्क्रमणं कुर्यात व्युत्क्रमं च पदे पदे। अनुलोमं जटातन्तुं विलोमं तु पृथक् पृथक्। रथाख्यां विकृतिं ब्रूयात् रथभेद प्रकथ्यन्ते। अनुलोमं जटातन्तुं प्रपठेद्वै पृथक् पृथक्। रथाख्यां विकृतिं धीमान् विलो रथस्यैकादशभेदा भवन्ति, ते तु विलोमेनैव जायन्ते।

यहां रथ के ११ भेद कहे हैं। हमे केवल द्विचक्री रथ, त्रिचक्री रथ, चतुश्चक्री रथ, मन्त्रद्वय रथ ये चार ही भेद मालूम हैं। कदाचित् मन्त्रत्रितय रथ, मन्त्र चतुष्करथ, और ऐसे और दो भेद हो सकते हैं, क्योंकि मन्त्र द्वयरथ के अनुसन्धान से ये और दो भेद होना सम्भव है, इस तरह ये छः भेद हुए। परन्तु उक्त श्लोक ११ भेद रथ के कहे हैं। उनका किसी को पता इस समय नही हैं। सम्भव है कि प्रत्येक रथ को पञ्च सन्धि युक्त कहने से ५ या ६ भेद अधिक होते होंगें। यह एक खोज का विषय है। इस समय जो विकृति वैदिक विद्वान बोलते हैं, उनको नमूने के तौर पर यहां दिया है। पाठक उनको देखकर जान सकते हैं कि प्राचीन ऋषि मुनियों ने वेद की सुरक्षा के लिए कितना महान यत्न किया था। इसमें घन नामक जो विकृति है, उसमें द्वितीय पद से प्रत्येक पद आगे पीछे करके १३ बार बोला जाता है। सम्पूर्ण ऋग्वेद का इस तरह घन पाठ मुख से ही बोलने वाले, अर्थात हाथ में ग्रन्थ न लेते हुए बोलने वाले वैदिक विद्वान महाराष्ट्र में २० से २५ हैं। हमारे स्वाध्याय मण्डल में कार्य करने वाले श्री पण्डित वेद मूर्ति सखा राम भट्ट जी ऐसे ही घन पाठी विद्वान हैं।

कई विद्वान सम्पूर्ण वेद ऋग्वेद का घन पाठ का पारायण करते हैं, इस कार्य के लिए कई महीने आवश्यक होते हैं। यह जैसा परिश्रम का कार्य है, वैसा ही बुद्धिमत्ता का और उत्तम स्मरणशक्ति का भी कार्य है।

अस्तु प्राचीन ऋषि मुनियों ने वेद के पद पद सुरक्षित रखने के लिए इतने परिश्रम किये थे। इस समय में भी ऐसे परिश्रमी वेद वेत्ता महाराष्ट्र में हैं। किसी अन्य प्रान्त में नही हैं।

22.आज वेदों की सुरक्षा कैसी हो?

आज वेदों के ब्लाक बनवाये जायेंगे, तो वेद के अक्षरों की सुरक्षा हो सकती है। इस कार्य के लिए धन चाहिये। चारों वेदों के 2000 पृष्ठों के लिये कम से कम 100000 रुपये लगेगें। वेद की सुरक्षा के लिये कौन यह धन देता है इस चिन्ता में हम हैं।

इन आठों विकृतियों के उदाहरण इसी स्थान में अगले पृष्ठों में पाठक देख सकते हैं।

23.अष्टौ विकृतयः

परः सन्निकर्षः संहिता (अष्टाध्यायां १.४.१०९ पाणिनिः) (वर्णानामतिशयितः संनिधिः संहिता संज्ञ स्यात्)

24.संहिता मन्त्र

ओ३म् ओषधयः संवदन्तेसोमेनसहराज्ञा। यस्मैकृणोतिब्राह्मणस्तंराजन्पारयामसि॥ ऋग्वेद १०.९७.२२

25.पदच्छेदपूर्वको मन्त्र पाठः

ओ३म् ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस् तं राजन् पारयामसि॥ ऋग्वेद १०.९७.२२

26.पदसंहितालक्षणम्

27.पदविच्छेदोऽसंहितः। (प्रतिशाख्येसूत्रे कात्यायनः) सुप्तिङन्तं पदं (अष्टा.)

28.पद पाठ

ओ३म् ओषधयः। सं। वदन्ते। सोमेन। सह। राज्ञा। यस्मै। कृणोति। ब्राह्मणः। तं। राजन्। पारयामसि ॥

29.क्रम लक्षणम्

क्रमेण पद द्वयस्य पाठः। क्रम पाठो योगरूढा संहिता इत्युच्यते। क्रमः स्मृतिप्रयोजनः (प्रा. सू. ४.१८ कात्यायनः क्रम पाठ लक्षणम् शौनकेनोक्तम्।)

क्रमो द्वाभ्यामभिक्रम्य प्रत्यादायोत्तरं द्वयोः। उत्तरेणोपसंदध्यात्तथार्धर्चं समापयेत्॥

30.क्रम पाठः

ओ३म् ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह। सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा॥ यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि।

पारयामसीति पारयामसि॥

31.जटा पाठ विकृति लक्षणानि

प्रतीकात्मक चित्र (हमारे यहां कितनी गहराई तक पहले वेदपाठ का प्रचलन था)

शैशिरीये समाम्नाये व्यालिनैव १ महर्षिणा। जटाद्या विकृतीरष्टौ लक्षयन्ते नातिविस्तरम्॥१॥

जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः। अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः॥२॥

अष्टौ विकृतयः क्रमपूर्वा भवन्ति। तासु जटा दण्डसंज्ञ के द्वे विकृतो मुख्ये। यत विकृतयः संभवन्ति। तत्र जटां शिखाऽनुसरति। तथा च दण्डं माला रेखा ध्वज रथा अनुसरन्ति घनस्तु जटादण्डावनुसरति।

32.जटा प्रथमं लक्षणम्

अनुलोमाविलोमाभ्यां त्रिवारं हि पठेत् क्रमम्। विलोमे पदवत्संधिः अनुलोमे यथाक्रमम्॥

33.द्वितीयं जटालक्षणम्

क्रमे यथोक्ते पदजातमेव द्विरभ्यसेदुत्तरमेव पूर्वम्। अभ्यस्य पूर्वं च तथोत्तरे पदेऽवसानमेवं हि जटाभिधीयते॥

34.जटा लक्षणम्

अनुलोमाविलोमाभ्यां त्रिवारं हि पठेत्क्रमम्। यथावत्स्वर संयुक्तं सा जटेत्यभिधीयते॥

ब्रूयात्क्रमविपर्यासौ पुनश्च क्रममुत्तरम्। जटाख्यां विकृतिं धीमान् विज्ञाय क्रमलक्षणम्।

35.जटा

अनुलोमः१ २+विलोमः२ १+अनुलोमः१ २॥ (क्रमः१ २+व्युत्क्रमः२ १+संक्रमः१ २)

अनुक्रम,उतक्रम,व्युत्क्रम,अभिक्रम,संक्रम।

36.जटा पाठः

१ २ २ १ १ २। २ ३ ३ २ २ ३। ३ ४ ४ ३ ३ ४। ४ ५ ५ ४ ४ ५। ५ ६ ६ ५ ५ ६। ६ ६॥

७ ८ ८ ७ ७ ८। ८ ९ ९ ८ ८ ९। ९ १० १० ९ ९ १०। १० ११ ११ १० १० ११। ११ १२ १२ ११ ११ १२। १२ १२॥

ओ३म् ओषंधयस् सं, समोषंधय, ओषंधयस् सम्। सं वंदन्ते, वदन्ते सं, सं वंदन्ते। वदन्ते सोमेंन, सोमेंन वदन्ते, वदन्ते सोमेंन। सोंमेन सह, सह सोमेंन, सोमेंन सह। सह राज्ञा, राज्ञां सह, सह राज्ञां। राज्ञेति राज्ञां॥

यस्मैं कृणोतिं, कृणोति यस्मै, यस्मैं कृणोतिं। कृणोतिं ब्राह्मणो, ब्रांह्मणः कृणोतिं, कृणोतिं ब्राह्मणः। ब्राह्मणास्तं, तं ब्रांह्मणो, ब्रांह्मणास्तं। तं रांजन्, राजंस्तं, तं रांजन्। राजन्पारयामसि, पारयामसि राजन्, राजन्पारयामसि। पारयामसीतिं। पारयामसि॥१॥

संहिता पाठ

ओ३म् ओषंधयः सं वंदन्ते सोमेंन सह राज्ञां। यस्मैं कृणोतिं ब्राह्मणस् तं रांजन् पारयामसि॥ ऋग्वेद १०.९७.२२

37.माला

माला द्वौ भेदौ पुष्प माला क्रम माला चेति। तत्र क्रम मालायाः लक्षणम्

38.क्रम माला लक्षणम्

ब्रूयात्क्रमविपर्यासावर्धर्चस्यादितोऽन्ततः। अन्तं चादिं नयेदेवं क्रमालेति गीयते॥

अवसानाश्चावसानांतं क्रमादुत्क्रमणं भवेत्। जटाख्यां विकृतिं धीमान् संहितायाः सदा पठेत्॥

पञ्चविंशति प्रभेदा वै मालाख्यां विकृतिं पठेत्। संहितादि शिखान्तं च अनुलोमविलोमतः॥

आदितोऽन्ततश्चापि मालाख्यां विकृतिं पठेत्। पञ्चविंशति प्रभेदाश्च मालाया संभवन्ति॥

मालायाश्च पुनर्भेदा कथिताः पञ्चविंशति।

39.क्रम माला

१ २। ६ ६॥ २ ३। ६ ५॥ ३ ४। ५ ४॥ ४ ५। ४। ३॥ ५ ६। ३ २॥ ६ ६॥

२ १। ७ ८। १२ १२॥ ८ ९। १२ ११॥ ९ १०।११ १०॥ १० ११। १० ९॥ ११ १२। ९ ८॥ १२ ११॥

ओषंधयः सं। राज्ञेति राज्ञां॥ सं वंदन्ते। राज्ञां सह॥ वदन्ते सोमेंन। सह सोमेंन॥ सोमेन सह। सोमेंन वदन्ते॥ सह राज्ञां। वदन्ते सं॥ राज्ञेति राज्ञां। समोषंधयः॥ यस्मैं कृणोतिं॥ पारयामसीतिं पारयामसि॥

कृणोतिं ब्राह्मणः। पारयामसि राजन्॥ ब्राह्मणास्तं राजँस्तं॥ तं रांजन्। तं ब्रांह्मणः॥ राजन्पारयामसि॥ ब्राह्मणः कृणोतिं॥ पारयामसीतिं पारयामसि॥ कृणोति यस्मै॥

40.क्रम माला

क्रमांक	आदितोऽन्ततः	अन्तं चादिं नयेत्
१	ओषंधयः सं।	राज्ञेति राज्ञां।
२	सं वंदन्ते।	राज्ञां सह।
३	वदन्ते सोमेंन।	सह सोमेंन।

४	सोमेन सह।	सोमेन वदन्ते।
५	सह राज्ञां।	वदन्ते सं।
६	राज्ञेति राज्ञां।	समोषधयः।
७	यस्मै कृणोति।	पारयामसीति पारयामसि।
८	कृणोति ब्राह्मणः।	पारयामसि राजन्।
९	ब्राह्मणास्तं।	राजँस्तं।
१०	तं राजन्।	तं ब्राह्मणः।
११	राजन्पारयामसि।	ब्राह्मणः कृणोति।
१२	पारयामसीति पारयामसि।	कृणोति यस्मै।

41.पुष्प माला

पुष्प माला लक्षणम्

माला मालेव पुष्पाणां पदानां ग्रन्थिनी हि सा। आवर्तन्ते त्रयस्तस्यां क्रमव्युत्क्रमसंक्रमा॥

जटावदेव पुष्प माला भवति। तत्र प्रतिपदं विराम इतिकारश्चेति विशेषः। केचिच्च पुष्पमालायामितिकारं पद सन्धिस्थानेऽपि वदन्ति। यथा "समोषधय" इति सम् ओषधयः। "ब्राह्मणास्तं" इति ब्राह्मणः तम्। "राजँस्तं" इति राजन् तम्। इत्यादि।

क्रमांक	(क्रमः) विरामः	(व्युत्क्रमः) विरामः	(संक्रमः)	इति। (विराम)
१	ओषधयः सं	समोषधयः	ओषधयः सं	इति। (विराम)
२	सं वदन्ते	वदन्ते सं	सं वदन्ते	इति। (विराम)
३	वदन्ते सोमेन	सोमेन वदन्ते	वदन्ते सोमेन	इति। (विराम)
४	सोमेन सह	सह सोमेन	सोमेन सह	इति। (विराम)
५	सह राज्ञां	राज्ञां सह	सह राज्ञां	इति। (विराम)
६	राज्ञेति राज्ञां			
७	यस्मै कृणोति	कृणोति यस्मै	यस्मै कृणोति	इति। (विराम)
८	कृणोति ब्राह्मणः	ब्राह्मणः कृणोति	कृणोति ब्राह्मणः	इति। (विराम)
९	ब्राह्मणास्तं	तं ब्राह्मणः	ब्राह्मणास्तं	इति। (विराम)
१०	तं राजन्	राजँस्तं	तं राजन्	इति। (विराम)
११	राजन्पारयामसि	पारयामसि राजन्	राजन्पारयामसि	इति। (विराम)
१२	पारयामसीति पारयामसि।			

42.शिखा लक्षणम्

पदोत्तरां जटामेव शिखामार्याः प्रचक्षते।

ओ३म् ओषधयस् सं, समोषधय, ओषधयस् सम्, वदन्ते।

सं वदन्ते, वदन्ते सं, सं वदन्ते, सोमेन।

वदन्ते सोमेन, सोमेन वदन्ते, वदन्ते सोमेन, सह।

सोमेन सह, सह सोमेन, सोमेन सह, राज्ञा।

सह राज्ञा, राज्ञा सह, सह राज्ञा।

राज्ञेति राज्ञा॥

यस्मै कृणोति, कृणोति यस्मै, यस्मै कृणोति, ब्राह्मणः।

कृणोति ब्राह्मणो, ब्राह्मणः कृणोति, कृणोति ब्राह्मणस, तम्।

ब्राह्मणस्तं, तं ब्राह्मणो, ब्राह्मणस्तं, राजन्।

तं राजन्, राजंस्तं, तं राजन्, पारयामसि।

राजन्पारयामसि, पारयामसि राजन्, राजन् पारयामसि।

पारयामसीति। पारयामसि॥

43.रेखा पाठ

रेखा लक्षणम्।

क्रमाद् द्वित्रिचतुष्पञ्चपदक्रममुदाहरेत्। पृथक्पृथग्विपर्यस्य लेखामाहुः पुनः क्रमात्॥

पूर्वार्धस्य

पदद्वयं

ओ३म् ओषधयः सं। समोषधयः। ओषधयः सं॥

पदत्रयं

सं वदन्ते सोमेन। सोमेन वदन्ते सं। सं वदन्ते॥

पदचतुष्कं

वदन्ते सोमेन सह राज्ञा। राज्ञा सह सोमेन वदन्ते। वदन्ते सोमेन॥

सोमेन सह। सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा॥

उत्तरार्धस्य

पदद्वयं

यस्मै कृणोति। कृणोति यस्मै। यस्मै कृणोति॥

पदत्रयं

कृणोति ब्राह्मणस्तं। तं ब्राह्मणः कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः।

पदचतुष्कं

ब्राह्मणस्तं राजन् पारयामसि। पारयामसि राजंस्तं ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं।

तं राजन्। राजन् पारयामसि। पारयामसीति पा।रयामसि॥

यद्वासर्वस्य मन्त्रस्य

पदद्वयं

ओषधयः सं। समोषधयः। ओषधयः सं॥

पदत्रयं

सं वंदन्ते सोमेन। सोमेन वदन्ते सं। सं वंदन्ते॥

पदचतुष्कं

वदन्ते सोमेन सह राज्ञा। राज्ञा सह सोमेन वदन्ते। वदन्ते सोमेन॥

पदपञ्चकं

सोमेन सह राज्ञा यस्मै कृणोति। कृणोति यस्मै राज्ञा सह सोमेन। सोमेन सह॥

पदषट्कं

सह राज्ञा यस्मै कृणोति ब्राह्मणास्तं। तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै राज्ञा सह।

पदसप्तकम्

राज्ञा यस्मै कृणोति ब्राह्मणास्तं राजन् पारयामसि पारयामसि राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै राज्ञा। राज्ञा यस्मै ॥

यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणाः। ब्राह्मणास्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि। पारयामसीति पारयामसि ॥

44.ध्वज लक्षणम्

ब्रूयादादेः क्रमं सम्यगन्तादुत्तारयेद्यदि। वर्गे च ऋचि वा यत्र पठनं स ध्वजः स्मृतः॥

जटादेः क्रमरूपं तु ह्यन्तादुत्तारयदिव। अर्धर्चा वा ऋचा वापि पठनं च ध्वजः स्मृतः॥

क्रमांक	आदे क्रमः	क्रमः	अन्तादुत्तारणं
१	ओषधयः सं	२	पारयामसीति पारयामसि।
३	सं वंदन्ते	४	राजन्पारयामसि
५	वदन्ते सोमेन	६	तं राजन्
७	सोमेन सह	८	ब्राह्मणास्तं
९	सह राज्ञा	१०	कृणोति ब्राह्मणाः
११	राज्ञेति राज्ञा	१२	यस्मै कृणोति
१३	यस्मै कृणोति	१४	राज्ञेति राज्ञा
१५	कृणोति ब्राह्मणाः	१६	सह राज्ञा
१७	ब्राह्मणास्तं	१८	सोमेन सह
१९	तं राजन्	२०	वदन्ते सोमेन
२१	राजन्पारयामसि	२२	सं वंदन्ते
२३	पारयामसीति पारयामसि।	२४	ओषधयः सं

अत्र विशेषः।

१. अत्र ध्वजस्य पठनक्रमोऽङ्कैः प्रदर्शितः।

२. यथा मन्त्रस्यैकस्यैवं ध्वजो भवति, तथैव पञ्च षट सप्त मन्त्र संख्याकस्य वर्गस्याप्येवमेव ध्वजो भवति।
तत्र वर्गादिस्थितस्य पदद्वयस्य वर्गान्तस्थेन पदेन द्विरुक्तेनेतिकारसहितेन च सम्बन्धो ज्ञातव्यः।
यथा "अग्निमीळे...आ ममदिति आ गमत्" इति प्रथमस्य वर्गस्य ऋगवेदस्य ध्वजो बोद्धव्यः।
वर्गे वा ऋषि वा यः स्यात्पठितः स ध्वजः स्मृतः। इति वा पाठः।

45.दण्डपाठः

दण्ड लक्षणम्

क्रममुक्त्वा विपर्यस्य पुनश्च क्रममुत्तरम्। अर्धर्चादेवमुक्तोऽयं क्रमदण्डोऽभिधीयते। चत्वारिंशद्भेदा भवन्ति दण्डस्य॥

पूर्वार्धस्य

ओ३म् ओषधयः सं॥ समोषधयः।

ओषधयः सं। सं वदन्ते॥ वदन्ते समोषधयः।

ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन ॥ सोमेन वदन्ते समोषधयः।

ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह ॥ सह सोमेन वदन्ते समोषधयः।

ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह ॥ सह राज्ञा॥ राज्ञा सह सोमेन वदन्ते समोषधयः। ओषधयः सं। सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन। सोमेन सह ॥ सह राज्ञा॥ राज्ञेति राज्ञा।

उत्तरार्धस्य

यस्मै कृणोति॥ कृणोति यस्मै।

यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः ॥ ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं ॥ तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन् ॥ राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि॥ पारयामसि राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै। यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि॥ पारयामसिति पारयामसि ॥

46.रथः

रथः लक्षणम्

अनुलोमं जटान्तं तु विलोमे तु पृथक् पृथक्। रथाख्यां विकृतिं ब्रूयाद्रथभेदः प्रकथ्यते॥ अनुलोमं जटान्तं तु प्रपठेद्वै पृथक् पृथक्। जटाख्यां विकृतिं धीमान् विलोमे तु पृथक् पृथक्॥ अथैकादशभेदा भवति। विलोमेनैकादशभेदा॥

पादशोऽर्धर्चशो वापि सहोक्त्या दण्डवद्रथः।

रथस्त्रिविधः। द्विचक्रस्त्रिचक्रश्चतुश्चक्रश्चेति। तत्र द्विचक्रो रथोऽर्धर्चशो भवति। त्रिचक्रस्तु रथः प्रतिपादे समानपद संख्यायुतस्य गायत्री छन्दः कस्यैव मन्त्रस्य भवति। चतुश्चक्रो रथस्तु रथस्तु पादश एक भवति।

द्वि चक्री रथः (अर्धर्चशः)

द्वि चक्री रथः (अर्धर्चशः)				
क्रम सख्या		पूर्वार्ध	उत्तरार्ध	पद क्रम
१	१	ओषधयः सं।	यस्मै कृणोति।	प्रथम एक पात्क्रमः
		समोषधयः।	कृणोति यस्मै।	व्युत्क्रमः
२	१	ओषधयः सं।	यस्मै कृणोति।	द्वितीयो द्विपात्क्रमः
	२	सं वदन्ते।	कृणोति ब्राह्मणः।	द्वितीयो द्विपात्क्रमः
		वदन्ते समोषधयः।	ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।	व्युत्क्रमः
३	१	ओषधयः सं।	यस्मै कृणोति।	तृतीयस्त्रिपात्क्रमः
	२	सं वदन्ते।	कृणोति ब्राह्मणः।	तृतीयस्त्रिपात्क्रमः
	३	वदन्ते सोमेन।	ब्राह्मणस्तं।	तृतीयस्त्रिपात्क्रमः
		सोमेन वदन्ते समोषधयः।	तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।	व्युत्क्रमः

४	१	ओषधयः सं।	यस्मै कृणोति।	चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः
	२	सं वदन्ते।	कृणोति ब्राह्मणः।	चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः
	३	वदन्ते सोमेन।	ब्राह्मणस्तं।	चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः
	४	सोमेन सह।	तं राजन्।	चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः
		सह सोमेन वदन्ते समोषधयः।	राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।	व्युत्क्रमः
५	१	ओषधयः सं।	यस्मै कृणोति।	पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः
	२	सं वदन्ते।	कृणोति ब्राह्मणः।	पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः
	३	वदन्ते सोमेन।	ब्राह्मणस्तं।	पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः
	४	सोमेन सह।	तं राजन्।	पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः
	५	सह राज्ञा।	राजन् पारयामसि।	पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः
		राज्ञेति राज्ञा।	पारयामसीति पारयामसि।	समाप्तिः

47.द्वि चक्री रथः

द्वि चक्री रथः पाठ विभिन्न दो मन्त्रों को लिया गया है क्योंकि इनमें सम पद प्राप्त होते हैं।

छन्दः गायत्री, स्वर षड्जः, देवता अग्नि, संहिता पाठ

ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ ऋग्वेद १। १। १

छन्द गायत्री, स्वर षड्जः, देवता अग्नि, संहिता पाठ

ओ३म् अयं देवाय जन्मने स्तोमो विप्रेभिरासया। अकारि रत्नधातमः॥ ऋग्वेद १। २०। १

अनयोर्द्वयोर्मन्त्रयोः साकल्येनापि द्विचक्रो रथो भवति। तत्र प्रथमः प्रकारो यथा...

द्वि चक्री रथः प्रथमः प्रकारो

ओ३म् अग्निमीळे। अयं देवाय॥ ईळेऽग्निं। देवायायं॥

अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। अयं देवाय॥ देवाय जन्मने॥ पुरोहितमीळेऽग्निं। जन्मने देवायायं॥

अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। पुरोहितं यज्ञस्य ॥ अयं देवाय। देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः॥ यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं। स्तोमो जन्मने देवायायं॥

अग्निमीळे। ईळे पुरोहितं। पुरोहितमिति यज्ञस्य। पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देवं। अयं देवाय। देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः। स्तोमो विप्रेभिः। देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निम्॥ विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं॥

अग्निमीळे। ईळे पुरोहितम्। पुरोहितं यज्ञस्य। पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देवं। देवमृत्विजं॥ अयम् देवाय। देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः। स्तोमो विप्रेभिः। विप्रेभिरासया॥ ऋत्विजन् देवम् यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निम्। आसया विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं॥

अग्निमीळे। ईळे पुरोहितम्। पुरोहितम् यज्ञस्य। पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देवं। देवमृत्विजं॥ अयन् देवाय। देवाय जन्मने। जन्मने स्तोमः। स्तोमो विप्रेभिः। विप्रेभिरासया॥ ऋत्विजमित्यृत्विजं॥ आसयेयासया॥

होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नधातमः॥ रत्न धातमं होतारं। रत्न धातमोऽकारि॥ होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नऽधातमः॥ रत्नऽधातममिति रत्नऽधातमं॥ रत्नऽधातममिति रत्नऽधातमः॥

48.द्विचक्री रथः द्वितीयः प्रकारो

पूर्वोक्तयोर्द्वयोर्मन्त्रयोः साकल्येन द्विचक्री रथो भवति। तस्य द्वितीयः प्रकारो यथा

अग्निमीळे। अयं देवाय ॥ ईळेऽग्निं। देवायायं ॥

अग्निमीळे। अयं देवाय ॥ ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने॥ पुरोहितमीळेऽग्निं। जन्मने देवायायं॥

अग्निमीळे। अयं देवाय ॥ ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने॥ पुरोहितं यज्ञस्य। जन्मने स्तोमः। यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं॥ स्तोमो जन्मने देवायायं॥

अग्निमीळे। अयं देवाय ॥ ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने॥ पुरोहितं यज्ञस्य। जन्मने स्तोमः। यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं॥ स्तोमो जन्मने देवायायं॥

अग्निमीळे। अयं देवाय ॥ ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने॥ पुरोहितं यज्ञस्य। जन्मने स्तोमः। पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देवं। स्तोमो विप्रेभिः ॥ देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं ॥ विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं॥

अग्निमीळे। अयं देवाय ॥ ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने ॥ पुरोहितं यज्ञस्य। जन्मने स्तोमः ॥ पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देवं। स्तोमो विप्रेभिः ॥ देवमृत्विजं विप्रेभिरासया ॥ ऋत्विजं देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं। आसया विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं॥

अग्निमीळे। अयं देवाय ॥ ईळे पुरोहितं। देवाय जन्मने ॥ पुरोहितं यज्ञस्य। जन्मने स्तोमः ॥ पुरोहितमिति पुरःऽहितं। यज्ञस्य देवं। स्तोमो विप्रेभिः ॥ देवमृत्विजं विप्रेभिरासया ॥ ऋत्विजमित्यृत्विजं। आसयेत्यासया ॥

होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नधातमः॥ रत्नधातमं होतारं। रत्नधातमोऽकारि॥ होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नधातमः॥ रत्नधातममिति रत्नऽधातमं। रत्नधातम इति रत्नऽधातमः॥

49.त्रिचक्री रथः

ओ३म् विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ ऋग्वेद १.२२.१९

इत्यस्य त्रिपदागायत्रीछन्दस्कस्य मन्त्रस्य प्रतिपादं समानपदसंख्यात्वात्त्रिचक्री रथो भवति, यथा

त्रि चक्री रथः					
क्रम संख्या		प्रथमः पादः	द्वितीयः पादः	तृतीयः पादः	क्रमः
१	१	विष्णोः कर्माणि।	यतो व्रतानि।	इन्द्रस्य युज्यः।	प्रथमः क्रमः
		कर्माणि विष्णोः।	व्रतानि यतः।	युज्य इन्द्रस्य।	व्युत्क्रमः
२	१	विष्णोः कर्माणि।	यतो व्रतानि।	इन्द्रस्य युज्यः।	द्वितीयः क्रमः
	२	कर्माणि पश्यत।	व्रतानि पस्पशे।	युज्य सखा।	द्वितीयः क्रमः
		पश्यत कर्माणि विष्णोः।	पस्पशे व्रतानि यतः।	सखा युज्य इन्द्रस्य।	व्युत्क्रमः
प्रथमः पादः		विष्णोः कर्माणि।	कर्माणि पश्यत।	पश्येति पश्यत।	समाप्तिः
द्वितीय पादः		यतो व्रतानि।	व्रतानि पस्पशे।	पस्पश इति पस्पशे।	समाप्तिः
तृतीय पादः		इन्द्रस्य युज्यः।	युज्य सखा।	सखेति सखा।	समाप्तिः

50.चतुश्चक्री रथः

चतुश्चक्री रथः					
क्रम संख्या	प्रथमः पादः	द्वितीयः पादः	तृतीयः पादः	चतुर्थः पादः	क्रमः

१	१	ओषधयः सं।	सोमेन सह।	यस्मै कृणोति।	तं राजन्।	प्रथमः क्रमः
		समोषधयः।	सह सोमेन।	कृणोति यस्मै।	राजंस्तं।	व्युत्क्रमः
२	१	ओषधयः सं।	सोमेन सह।	यस्मै कृणोति।	तं राजन्।	द्वितीयः क्रमः
	२	सं वदन्ते।	सह राज्ञां।	कृणोति ब्राह्मणः।	राजन्पारयामसि।	द्वितीयः क्रमः
		वदन्ते समोषधयः।	राज्ञां सह सोमेन।	ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।	पारयामसि राजंस्तं।	व्युत्क्रमः
प्रथमः पादः		ओषधयः सं।	सं वदन्ते।	वदन्त इति वदन्ते।	समाप्तिः	
द्वितीय पादः		सोमेन सह।	सह राज्ञां।	राज्ञेति राज्ञां।	समाप्तिः	
तृतीय पादः		यस्मै कृणोति।	कृणोति ब्राह्मणः।	ब्राह्मण इति ब्राह्मणः।	समाप्तिः	
चतुर्थ पादः		तं राजन्।	राजन्पारयामसि।	पारयामसीति पारयामसि।	समाप्तिः	

51.घनः

घनश्चतुर्विधः। घनो घनवल्लभश्च। तौ च प्रत्येकं द्विधा भवतः।

प्रथमं घन लक्षणम्

अन्तात्क्रमं पठेत्पूर्वमादिपर्यन्तमानयेत्। आदिक्रमं नयेदन्तं घनमाहुर्मनीषिणः।

पूर्वार्धस्य (अन्तादापर्यन्तम्)

राज्ञेति राज्ञां। सह राज्ञां। सोमेन सह। वदन्ते सोमेन। सं वदन्ते। ओषधयः सं ...

पूर्वार्धस्य (आदितोऽन्तपर्यन्तम्)

सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन सोमेन सह। सह राज्ञां। राज्ञेति राज्ञां।

उत्तरार्धस्य (अन्तादापर्यन्तम्)

पारयामसीति पारयामसि। राजन् पारयामसि। तं राजन्। ब्राह्मणस्तं। कृणोति ब्राह्मणः। यस्मै कृणोति ...

उत्तरार्धस्य (आदितोऽन्तपर्यन्तम्)

कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि। पारयामसीति पारयामसि।

द्वितीयं घन लक्षणम्

शिखामुक्त्वा विपर्यस्य तत्पदानि पुनः पठेत्। अयं घन इति प्रोक्त इत्यष्टौ विकृतीः पठेत् ॥

शिखाः पाठः तस्य विपर्यासः तत्पदानां पुनः पाठः

ओषधयः सं समोषधय ओषधयः सं वदन्ते वदन्ते समोषधय ओषधयः सं वदन्ते ॥

सं वदन्ते वदन्ते सं सं वदन्ते सोमेन सोमेन वदन्ते सं सं वदन्ते सोमेन ॥

वदन्ते सोमेन सोमेन वदन्ते वदन्ते सोमेन सह सह सोमेन वदन्ते वदन्ते सोमेन सह॥

सोमेन सह सह सोमेन सोमेन सह राज्ञा राज्ञां सह सोमेन सोमेन सह राज्ञां॥

सह राज्ञा राज्ञां सह सह राज्ञां ॥ राज्ञेति राज्ञां॥

यस्मै कृणोति कृणोति यस्मै यस्मै कृणोति ब्रह्मणो ब्राह्मणः कृणोति यस्मै यस्मै कृणोति ब्राह्मणः ॥

कृणोति ब्राह्मणो ब्राह्मणः कृणोति कृणोति ब्राह्मणस्तं तं ब्राह्मणः कृणोति कृणोति ब्राह्मणस्तं ॥

ब्राह्मणस्तं तं ब्राह्मणो ब्राह्मणस्तं राजन् राजन्स्तं ब्राह्मणो ब्राह्मणस्तं राजन् ॥

तं राजन् राजन्स्तं तं राजन् पारयामसि पारयामसि राजन्स्तं तं राजन् पारयामसि ॥

राजन् पारयामसि पारयामसि राजन्। राजन् पारयामसि ॥ पारयामसीति पारयामसि ॥

52.घनः पाठ

ओ३म् गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः। ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥ ऋग्वेद १.१०.१

प्रथमोऽर्धः

गायन्ति त्वा, त्वा गायन्ति, गायन्ति त्वा, गायत्रिणो, गायत्रिणस्त्वा गायन्ति, गायन्ति त्वा गायत्रिणः ॥

त्वा गायत्रिणो, गायत्रिणस्त्वा, त्वा गायत्रिणो, ऽर्चन्त्य, ऽर्चन्ति गायत्रिणस्त्वा, त्वा गायत्रिणोऽर्चति ॥

गायत्रिणोऽर्चन्त्य, ऽर्चन्ति गायत्रिणो, गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कम् ऽकर्मर्चन्ति गायत्रिणो गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कम् ॥

अर्चन्त्यर्कम् ऽर्कमर्चन्त्य ऽर्चन्त्यर्कमऽर्किमणो ऽर्किणोऽर्कमर्चन्त्य ऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ॥

द्वितीयोऽर्धः

ब्रह्माणस्त्वा, त्वा ब्रह्मणो, ब्रह्मणस्त्वा, शतक्रतो शतक्रतो त्वा ब्रह्माणो, ब्रह्माणस्त्वा शतक्रतो ॥

त्वा शतक्रतो, शतक्रतो त्वा, त्वा शतक्रत, उदुच्छतक्रतो त्वा, त्वा शतक्रत उत् ॥

शतक्रत उदुच्छतक्रतो, शतक्रत उद्वंशमिवः वंशमिवोच्छतक्रतो, शतक्रत उद्वंमिव ॥ शतक्रतो इति शतऽक्रतो ॥

उद्वंशमिव, वंशमिवोदुद्वंशमिव येमिरे, येमिरे वंशमिवोदु द्वंशमिव येमिरे ॥ वंशमिवेति वंशम्ऽइव। येमिरे इति येमिरे ॥

वंशमिव येमिरे, येमिरे वंशमिव, वंशमिव येमिरे ॥ वंशमिवेति वंशम्ऽइव। येमिरे इति येमिरे ॥

53.पञ्चसन्धियुक्तो घनपाठः

घन वल्लभः

पदद्वयस्य क्रमोत्क्रमव्युत्क्रामाभिक्रमसंक्रमैः पञ्चसन्धिपाठो भवति। अनुलोमविलोमानुलोमैजर्टापाठो जायते। जटया सहोत्तरपदपाठेन शिखापाठो भवति। क्रमुत्क्त्वा, विपर्यस्य, पुनश्च क्रमपाठे कृते ध्वजो भवति। जटादण्डाभ्यः घनपाठः सिद्धय्यति। सर्वमेवैतत्पञ्चसन्धियुते घनपाठे घनवल्लभे समुचयेन संगच्छते।

ओ३म् परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूंतीरनु। इच्छन्तीरुरुचक्षसम् ॥ ऋग्वेद १.२५.१६

परा मे। मे मे। मे परा। परा परा। परा मे ॥ परा मे, मे परा, परा मे, यन्ति; यन्ति मे परा परा, मे यन्ति ॥

मे यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति मे। मे मे। मे यन्ति ॥ मे यन्ति, यन्ति मे, मे यन्ति, धीतयो; धीतयो यन्ति मे, मे यन्ति धीतयः ॥

यन्ति धीतयः। धीतयो धीतयः। धीतयो यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति धीतयः ॥ यन्ति धीतयो, धीतयो यन्ति, यन्ति धीतयो, गावो गावो, धीतयो यन्ति, यन्ति धीतयो गावः॥

धीतयो गावः। गावो गावः। गावो धीतयः। धीतयो धीतयः। धीतयो गावः। धीतयो गावो, गावो धीतयो, धीतयो गावो; न; न गावो धीतयो धीतयो गावो न ॥

गावो न। न न। न गावः। गावो गावः। गावो न ॥ गावो न, न गावो, गावो न, गव्यूंती;‾‾‾र्गव्यूंतीर्न गावो, गावो न गव्यूंतीः ॥

न गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्न। न न। न गव्यूतीः। न गव्यूंती, र्गव्यूंतीर्न, न गव्यूंतीर□sन्व,□sनु गव्यूंतीर्न, न गव्यूंतीरनु ॥

गव्यूंतीरनु। अन्वनु। अनु गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्गव्यूंतीः। गव्यूंतीरनु ॥ गव्यूंतीरन्व□sनुगव्यूंती□र्गव्यूंतीरनु ॥ अन्वित्यनु ॥

इच्छंतीरुरुचक्षसं। उरुचक्षसमुरुचक्षसं। उरुचक्षसमिच्छंतीः। इच्छंतीरिच्छंतीः। इच्छंतीरुरुचक्षसं। ईच्छंतीरुरुचक्षसं ॥ उरुचक्षसमित्युरुऽचक्षसं ॥

54.पञ्च सन्धियुक्तो जटा पाठः

ओ३म् परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूंतीरनु। इच्छन्तीरुरुचक्षसम् ॥ ऋग्वेद १.२५.१६

परा मे। मे मे। मे परा। परा परा। परा मे ॥ परा मे, मे परा, परा मे ॥

मे यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति मे। मे मे। मे यन्ति ॥ मे यन्ति, यन्ति मे, मे यन्ति ॥

यन्ति धीतयः। धीतयो धीतयः। धीतयो यन्ति। यन्ति यन्ति। यन्ति धीतयः ॥ यन्ति धीतयो, धीतयो यन्ति, यन्ति धीतयोः॥

धीतयो गावः। गावो गावः। गावो धीतयः। धीतयो धीतयः। धीतयो गावः ॥ धीतयो गावो, गावो धीतयो, धीतयो गावोः ॥

गावो न। न न। न गावः। गावो गावः। गावो न ॥ गावो न, न गावो, गावो न ॥

न गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्न। न न। न गव्यूंतीः ॥ न गव्यूंतीर्गव्यूंतीर्न, न गव्यूंतीः ॥

गव्यूंतीरनु। अन्वनु। अनु गव्यूंतीः। गव्यूंतीर्गव्यूंतीः। गव्यूंतीरनु ॥ गव्यूंतीरन्वनु गव्यूतीर्गव्यूंतीरनु ॥ अन्वित्यनु अन्वित्यनु ॥

इच्छंतीरुरुचक्षंसं। उरुचक्षंसमुरुचक्षंसं। उरुचक्षंसमिच्छंतीः। इच्छंतीरिच्छंतीः। इच्छंतीरुरुचक्षंसं ॥ ईच्छंतीरुरुचक्षसमुरुचक्षंसमिच्छंतीरिच्छंतीरुरुचक्षंसं।

[एवमेव पञ्चसन्धियुक्ताः सर्वा अपि विकृतयः पठ्यन्ते वेदविद्भिः। पदक्रम विशेषज्ञो वर्णाक्रमविचक्षणः। स्वरमात्राविशेषज्ञो गच्छेदाचार्यसंपदम् ॥ संहितापाठतः पुण्यं द्विगुणं पदपाठतः। त्रिगुणं क्रमपाठेन जटापाठेन षड्गुणम् ॥ (वराहपुराणे)

55.अंकीय क्रम के आधार पर विकृति पाठो में पद का स्थान

अङ्क के आधार के अनुसार पदों का स्थान वेदमत्र का मूल स्वरूप (विकृति पाठों के लिए पूर्वाधस्य व उत्तरार्धस्य के अन्त में इतिकरण किया जाता है।)

संहिता पाठ

वेदमत्र का मूल स्वरूप

सक्रम पद पाठ

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२।

व्युत्क्रम पद पाठ

१२ ११ १० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३ २ १।

सक्रम क्रम पाठ

१ २। २ ३। ३ ४। ४ ५। ५६।...

व्युत्क्रम क्रम पाठ

६ ५। ५ ४। ४ ३। ३ २। २ १।...

जटा पाठ (पद क्रम)

१ २ २ १ १ २। २ ३ ३ २ २ ३। ३४४३३४। ४५५४४५ ॥...

घन पाठ पद क्रम

१२ २१ १२ ३ ३ २११२३। २ ३३२ २ ३ ४४३ २ २ ३४। ३ ३४५५४३३४५ २३ ५ ॥...

पञ्च सन्धि पाठ (पद क्रम)

१२। २२। २१। ११। १२। २३। ३३। ३२। २२। २३। ३४। ४४। ४३। २३। ३४।...

पुष्प माला पाठ (पद क्रम)

१२। ६६। २३। ६५। ३४। ५४। ४५। ४३। ५६। ३२। ६६। २१।...

क्रम माला पाठ (पद क्रम)

१२२११२॥

शिखा पाठ (पद क्रम)

१२२ १ १२३। २ ३ ३ २ २ ३ ४। ३ ४ ४ ३ ३ ४ ५। ४ ५५४४५६ ॥...

रेखा पाठ (पद क्रम)

१२। २१। १२। २३४। ४३२। २३। ३४५६। ६५४३॥...

ध्वज पाठ (पद क्रम)

१२ ९९ १००। २ ३ ९८ ९९। ३ ४ ९७ ९८। ४ ५ १६ १७। ५६ ९५ ९६॥...

दण्ड पाठ (पद क्रम)

१२।२१।१२। २१। ३२१।

रथ पाठ (पद क्रम)

१२ ५६। २१ ६५।...

56.ओ३म् अग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृ॒त्विज॑म्। ऋग्वेद १.१.१

57.ओ३म् अ॒यं दे॒वाय॒ जन्म॑ने॒ स्तोमो॒ विप्रे॑भिरास॒या। ऋग्वेद १.२०.१

ओ३म् अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृ॒त्विज॑म्। होता॑रं रत्न॒धात॑मम् ॥ ऋग्वेद १.१.१

ओ३म् अ॒यं दे॒वाय॒ जन्म॑ने॒ स्तोमो॒ विप्रे॑भिरास॒या। अका॑रि रत्न॒धात॑मः ॥ ऋग्वेद १.२०.१

द्वि चक्री रथः प्रथमः प्रकारो

ओ३म्अ॒ग्निमी॑ळे। अ॒यं दे॒वाय॑॥ ई॒ळेऽग्निं। दे॒वाया॒यं॥

अ॒ग्निमी॑ळे। ई॒ळे पु॒रोहि॑तं। अ॒यं दे॒वाय॑॥ दे॒वाय॒ जन्म॑ने॥ पु॒रोहि॑तमीळे॒ऽग्निं। जन्म॑ने दे॒वाया॒यं॥

अ॒ग्निमी॑ळे। ई॒ळे पु॒रोहि॑तं। पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑॥ अ॒यं दे॒वाय॑। दे॒वाय॒ जन्म॑ने। जन्म॑ने स्तोमः॑॥ य॒ज्ञस्य॑ पु॒रोहि॑तमीळे॒ऽग्निं। स्तोमो॒ जन्म॑ने दे॒वाया॒यं॥

अ॒ग्निमी॑ळे। ई॒ळे पु॒रोहि॑तं। पु॒रोहि॑तमिति य॒ज्ञस्य॑। पु॒रोहि॑तमिति॑ पु॒रःऽहि॑तं। य॒ज्ञस्य॑ दे॒वं। अ॒यं दे॒वाय॑। दे॒वाय॒ जन्म॑ने। जन्म॑ने॒स्तोमः॑। स्तोमो॒विप्रे॑भिः। दे॒वं य॒ज्ञस्य॑ पु॒रोहि॑त॒मीळे॒ऽग्निम्॥ विप्रे॑भिः॒स्तोमो॒जन्म॑ने दे॒वाया॒यं॥

अ॒ग्निमी॑ळे। ई॒ळे पु॒रोहि॑तम्। पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑। पु॒रोहि॑तमिति॑ पु॒रःऽहि॑तं। य॒ज्ञस्य॑ दे॒वं। दे॒वमृ॒त्विज॑॥ अ॒यम् दे॒वाय॑। दे॒वाय॒ जन्म॑ने। जन्म॑ने॒स्तोमः॑। स्तोमो॒विप्रे॑भिः। विप्रे॑भिरास॒या॥ ऋ॒त्विज॑न् दे॒वम् य॒ज्ञस्य॑ पु॒रोहि॑तमीळे॒ऽग्निम्। आ॒स॒या विप्रे॑भिः॒स्तोमो॒जन्म॑ने दे॒वाया॒यं॥

अ॒ग्निमी॑ळे। ई॒ळे पु॒रोहि॑तम्। पु॒रोहि॑तम् य॒ज्ञस्य॑। पु॒रोहि॑तमिति॑ पु॒रःऽहि॑तं। य॒ज्ञस्य॑ दे॒वं। दे॒वमृ॒त्विज॑॥ अ॒यन् दे॒वाय॑। दे॒वाय॒ जन्म॑ने। जन्म॑ने॒स्तोमः॑। स्तोमो॒विप्रे॑भिः। विप्रे॑भिरास॒या॥ ऋ॒त्विज॒मित्यृ॒त्विज॑॥ आ॒स॒ये॒या॑सया॥

होता॑रं रत्न॒धात॑मं। अका॑रि रत्न॒धात॑मः॥ र॒त्न॒ धात॒मं॒ होता॑रं। र॒त्न॒ धात॒मोऽका॑रि॥ होता॑रं र॒त्न॒धात॑मं। अका॑रि रत्न॒ऽधात॑मः॥ रत्न॒ऽधात॑म॒मिति॑ रत्न॒ऽधात॑मं॥ रत्न॒ऽधात॑ममिति॑ रत्न॒ऽधात॑मः॥

द्विचक्री रथःद्वितीयः प्रकारो

अ॒ग्निमी॑ळे। अ॒यं दे॒वाय॑ ॥ ई॒ळेऽग्निं। दे॒वाया॒यं ॥

अ॒ग्निमी॑ळे। अ॒यं दे॒वाय॑ ॥ ई॒ळे पु॒रोहि॑तं। दे॒वाय॒ जन्म॑ने॥ पु॒रोहि॑तमीळे॒ऽग्निं। जन्म॑ने दे॒वाया॒यं॥

अ॒ग्निमी॑ळे। अ॒यं दे॒वाय॑ ॥ ई॒ळे पु॒रोहि॑तं। दे॒वाय॒ जन्म॑ने॥ पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑। जन्म॑ने॒ स्तोमः॑। य॒ज्ञस्य॑ पु॒रोहि॑तमीळे॒ऽग्निं॥ स्तोमो॒ जन्म॑ने दे॒वाया॒यं॥

अ॒ग्निमी॑ळे। अ॒यं दे॒वाय॑ ॥ ई॒ळे पु॒रोहि॑तं। दे॒वाय॒ जन्म॑ने॥ पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑। जन्म॑ने॒ स्तोमः॑। य॒ज्ञस्य॑ पु॒रोहि॑तमीळे॒ऽग्निं॥ स्तोमो॒ जन्म॑ने दे॒वाया॒यं॥

अ॒ग्निमी॑ळे। अ॒यं दे॒वाय॑ ॥ ई॒ळे पु॒रोहि॑तं। दे॒वाय॒ जन्म॑ने॥ पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑। जन्म॑ने॒ स्तोमः॑। पु॒रोहि॑तमिति॑ पु॒रःऽहि॑तं। य॒ज्ञस्य॑ दे॒वं। स्तोमो॒ विप्रे॑भिः ॥दे॒वं य॒ज्ञस्य॑ पु॒रोहि॑तमीळे॒ऽग्निं॥ विप्रे॑भिः स्तोमो॒ जन्म॑ने दे॒वाया॒यं॥

अ॒ग्निमी॑ळे। अ॒यं दे॒वाय॑ ॥ ई॒ळे पु॒रोहि॑तं। दे॒वाय॒ जन्म॑ने ॥ पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑। जन्म॑ने॒ स्तोमः॑ ॥ पु॒रोहि॑तमिति॑ पु॒रःऽहि॑तं। य॒ज्ञस्य॑ दे॒वं। स्तोमो॒ विप्रे॑भिः ॥दे॒वमृ॒त्विज॑विप्रे॑भिरास॒या ॥ ऋ॒त्विज॑ दे॒वं य॒ज्ञस्य॑ पु॒रोहि॑तमीळे॒ऽग्निं। आ॒स॒या विप्रे॑भिः स्तोमो॒ जन्म॑ने दे॒वाया॒यं॥

अ॒ग्निमी॑ळे। अ॒यं दे॒वाय॑ ॥ ई॒ळे पु॒रोहि॑तं। दे॒वाय॒ जन्म॑ने ॥ पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑। जन्म॑ने॒ स्तोमः॑ ॥ पु॒रोहि॑तमिति॑ पु॒रःऽहि॑तं। य॒ज्ञस्य॑

देवं। स्तोमो विप्रेभिः ॥देवमृत्विजविप्रेभिरासया ॥ ऋत्विजमित्यृत्विजं। आसयेत्यासया ॥

होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नधातमः॥ रत्नधातमं होतारं। रत्नधातमोऽकारि॥ होतारं रत्नधातमं। अकारि रत्नधातमः॥ रत्नधातममिति रत्नऽधातमं। रत्नधातम इति रत्नऽधातमः॥

रथःद्विचक्री रथः (अर्धर्चशः)

58.ओ३म् ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा। ऋग्वेद १०.९७.२२

संहिता पाठ, उदात्त अनुदात्त पाठ

औषधीस्तुतिः, निचृदनुष्टुप्, गान्धारः, भिषगाथर्वणः।

ओ३म् ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन्पारयामसि ॥ ऋग्वेद १०.९७.२२

पदार्थः (ओषधयः) ओषधियाँ (सोमेन) सोमनामक ओषधिविशेष (राज्ञा सह) नीरोगकरण गुणों से राजमान के साथ (सं वदन्ते) संवाद करती हुई सी-एकाङ्ग होती हुई सी मानों कहती हैं (राजन्) हे नीरोगकरण गुणों से राजमान ! (ब्राह्मणः) विद्वान् वैद्य (यस्मै) जिस रोग के लिए (कृणोति) हमारा प्रयोग करता है, (तम्) उसे (पारयामसि) रोगसमुद्र से पार करती हैं॥

पद पाठ

ओ३म् ओषधयः। सम्। वदन्ते। सोमेन। सह। राज्ञा। यस्मै। कृणोति। ब्राह्मणः। तम्। राजन्। पारयामसि ॥

क्रम पाठ

ओ३म् ओषधयस्सं। संवदन्ते। वदन्तेसोमेन। सोमेनसह। सहराज्ञा। राज्ञेतिराज्ञा॥

यस्मैकृणोति। कृणोतिब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तंराजन्। राजन्पारयामसि। पारमसीतिपारयामसि॥

जटा पाठ

ओ३म् ओषधयस् सं, समोषधय, ओषधयस् सम्। सं वदन्ते, वदन्ते सं, सं वदन्ते। वदन्ते सोमेन, सोमेन वदन्ते, वदन्ते सोमेन। सोमेन सह, सह सोमेन, सोमेन सह। सह राज्ञा, राज्ञा सह, सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा॥

यस्मै कृणोति, कृणोति यस्मै, यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणो, ब्राह्मणः कृणोति, कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं, तं ब्राह्मणो, ब्राह्मणस्तं। तं राजन्, राजंस्तं, तं राजन्। राजन्पारयामसि, पारयामसि राजन्, राजन् पारयामसि। पारयामसीति। पारयामसि॥

शिखा पाठ

ओ३म् ओषधयस् सं, समोषधय, ओषधयस् सम्, वदन्ते। सं वदन्ते, वदन्ते सं, सं वदन्ते, सोमेन। वदन्ते सोमेन, सोमेन वदन्ते, वदन्ते सोमेन, सह। सोमेन सह, सह सोमेन, सोमेन सह, राज्ञा। सह राज्ञा, राज्ञा सह, सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा॥

यस्मै कृणोति, कृणोति यस्मै, यस्मै कृणोति, ब्राह्मणः। कृणोति ब्राह्मणो, ब्राह्मणः कृणोति, कृणोति ब्राह्मणास, तम्। ब्राह्मणस्तं, तं ब्राह्मणो, ब्राह्मणस्तं, राजन्। तं राजन्, राजंस्तं, तं राजन्, पारयामसि। राजन्पारयामसि, पारयामसि राजन्, राजन् पारयामसि। पारयामसीति। पारयामसि॥

घन पाठ

ओ३म् ओषधयः सं समोषधय ओषधयः सं वदन्ते वदन्ते समोषधय ओषधयः सं वदन्ते। सं वदन्ते वदन्ते सं सं वदन्ते सोमेन सोमेन वदन्ते सं सं वदन्ते सोमेन। वदन्ते सोमेन सोमेन वदन्ते वदन्ते सोमेन सह सह सोमेन वदन्ते वदन्ते सोमेन सह। सोमेन सह सह सोमेन सोमेन सह राज्ञा राज्ञा सह सोमेन सोमेन सह राज्ञा। सह राज्ञा राज्ञा सह सह राज्ञा ॥ राज्ञेति राज्ञा॥

यस्मै कृणोतिकृणोति यस्मै यस्मै कृणोति ब्रह्मणो ब्राह्मणः कृणोति यस्मै यस्मै कृणोति ब्राह्मणः। कृणोति ब्राह्मणो ब्राह्मणः कृणोति कृणोति ब्राह्मणस्तं तं ब्राह्मणः कृणोति कृणोति ब्राह्मणस्तं। ब्राह्मणस्तं तं ब्राह्मणो ब्राह्मणस्तं राजन् राजन्स्तं ब्राह्मणो ब्राह्मणस्तं राजन्। तं राजन् राजन्स्तं तं राजन् पारयामसि पारयामसिराजन्स्तं तं राजन् पारयामसि। राजन् पारयामसि पारयामसि राजन्। राजन् पारयामसि। पारयामसीति पारयामसि ॥

रेखा पाठ

ओ३म् ओषधयः सं। समोषधयः। ओषधयः सं॥

सं वंदन्ते सोमेंन। सोमेंन वदन्ते सं। सं वंदन्ते॥

वदन्ते सोमेंन सह राज्ञां। राज्ञां सह सोमेंन वदन्ते। वदन्ते सोमेंन॥

सोमेंन सह। सह राज्ञां। राज्ञेति राज्ञां॥

यस्मैं कृणोतिं। कृणोति यस्मै। यस्मैं कृणोतिं॥

कृणोतिं ब्राह्मणस्तं। तं ब्रांह्मणः कृणोतिं। कृणोतिं ब्राह्मणः।

ब्राह्मणस्तं रांजन् पारयामसि। पारयामसि राजंस्तं ब्रांह्मणः। ब्राह्मणस्तं।

तं रांजन्। राजन् पारयामसि। पारयामसीतिपा। रयामसि॥

रेखा पाठ सर्वस्य मन्त्रस्य

ओ३म् ओषंधयः सं। समोषंधयः। ओषंधयः सं॥

सं वंदन्ते सोमेंन। सोमेंन वदन्ते सं। सं वंदन्ते॥

वदन्ते सोमेंन सह राज्ञां। राज्ञां सह सोमेंन वदन्ते। वदन्ते सोमेंन॥

सोमेंन सह राज्ञा यस्मैं कृणोतिं। कृणोति यस्मै राज्ञां सह सोमेंन। सोमेंन सह॥

सह राज्ञां यस्मैं कृणोतिं ब्राह्मणस्तं। तं ब्रांह्मणः कृणोतिं यस्मै राज्ञां संह।

राज्ञा यस्मैं कृणोतिं ब्राह्मणस्तं रांजन् पारयामसि पारयामसि राजंस्तं ब्रांह्मणः कृणोति यस्मै राज्ञां। राज्ञा यस्मैं॥

यस्मैं कृणोति। कृणोति ब्रांह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं रांजन्। रांजन् पारयामसि। पारयामसिंति पारयामसि॥

ध्वज पाठ

ओ३म् ओषंधयः संपारयामसीतिं पारयामसि।

सं वंदन्तेराजन्पारयामसि।

वदन्ते सोमेंनतं रांजन्।

सोमेंन सहब्राह्मणस्तं।

सह राज्ञांकृणोतिं ब्राह्मणः।

राज्ञेति राज्ञांयस्मैं कृणोतिं।

यस्मैं कृणोतिंराज्ञेति राज्ञां।

कृणोतिं ब्राह्मणःसह राज्ञां।

ब्राह्मणस्तंसोमेंन सह।

तं रांजन्वदन्ते सोमेंन।

राजन्पारयामसिसं वंदन्ते।

पारयामसीतिं पारयामसि। ओषंधयः सं।

दण्डपाठः

पूर्वार्धस्य

ओ३म् ओषंधयः सं॥ समोषंधयः।

ओषंधयः सं। सं वंदन्ते॥ वदन्ते समोषंधयः।

ओषंधयः सं। सं वंदन्ते। वदन्ते सोमेंन॥ सोमेंन वदन्ते समोषधयः।

ओषंधयः सं। सं वंदन्ते। वदन्ते सोमेंन। सोमेंन सह ॥ सह सोमेंन वदन्ते समोषंधयः।

ओषंधयः सं। सं वंदन्ते। वदन्ते सोमेंन। सोमेंन सह ॥ सह राज्ञां॥

राज्ञां सह सोमेंन वदन्ते समोषंधयः। ओषंधयः सं। सं वंदन्ते। वदन्ते सोमेंन। सोमेंन सह ॥सह राज्ञां॥ राज्ञेति राज्ञां।

उत्तरार्धस्य

यस्मै कृणोति॥ कृणोति यस्मै।

यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः॥ ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं ॥ तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन् ॥ राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि॥ पारयामसि राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै। यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि॥ पारयामसिति पारयामसि ॥

ओ३म् ओषधयः सं। यस्मै कृणोति।

समोषधयः। कृणोति यस्मै।

ओषधयः सं। यस्मै कृणोति।

सं वदन्ते। कृणोति ब्राह्मणः।

वदन्ते समोषधयः। ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

ओषधयः सं। यस्मै कृणोति।

सं वदन्ते। कृणोति ब्राह्मणः।

वदन्ते सोमेन। ब्राह्मणस्तं।

सोमेन वदन्ते समोषधयः। तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

ओषधयः सं। यस्मै कृणोति।

सं वदन्ते। कृणोति ब्राह्मणः।

वदन्ते सोमेन। ब्राह्मणस्तं।

सोमेन सह। तं राजन्।

सह सोमेन वदन्ते समोषधयः। राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै।

ओषधयः सं। यस्मै कृणोति।

सं वदन्ते। कृणोति ब्राह्मणः।

वदन्ते सोमेन। ब्राह्मणस्तं।

सोमेन सह। तं राजन्।

सह राज्ञा। राजन् पारयामसि।

राज्ञेति राज्ञा। पारयामसीति पारयामसि।

59.ओ३म् तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। यजुर्वेद ३.३५

देवता सविता, छन्द गायत्री (अतः इसे निचृद गायत्री कहते हैं।), स्वर षड्ज,

यजुर्वेद संहिता ३६। ३, सामवेद १४६२, ऋग्वेद, ३। ६२। १०, यजुर्वेद संहिता ३। ३५, २२। ९, ३०। २, काण्व यजुर्वेद संहिता ३। ४३, २४। १३, ३४। २, ३६। ३ तैतरीय संहिता १। ५। ६। १२, ४। १। ११। ७ मैत्रायणी संहिता ४। १०। ७७॥

ब्राह्मण मन्त्रों में गायत्री मन्त्रों का उल्लेख अनेक स्थानो में है।

ऐतरेय ब्राह्मण ४। ३२। २, ५। ५। ६, १३। ८, १९। ८, कौशीतकी ब्राह्मण २२। ३, २६। १०, गोपथ ब्राह्मण १। १। ३२, १। १। ३४, दैवत ब्राह्मण ३। २५, शतपथ ब्राह्मण २। ३। ४। ३९, २३। ६। २। ९, १४। ९। ३। ११, तैतरीय सं० १। ५। ६। ४, ४। १। १, मैत्रायणी सं० ४। १०। ३, १४९। १४॥

आरण्यकों में गायत्री का उल्लेख इन स्थानों पर है। तैत्तरीय आरण्यक १। १। २१०। २७। १, बृहदारण्यक ६। ३। ११। ४।

८॥

उपिनषदों में इस महामन्त्र की चर्चा निम्न प्रकरणों में है

नारायण उपिनषद् १५, २, मैत्रेय उपिनषद् ६। ७। ३४, जैमिनी उपिनषद् ४। २८। १, श्वेताश्वेतर उपिनषद् ४। १८॥

सूत्र ग्रंथों में गायत्री का विवेचन निम्न प्रसंगों में आया है।

आश्वालायन श्रौत सूत्र ७। ६। ६, ८। १। १८, शांखायन श्रौत सूत्र २। १०। २, १२। ७, ५। ५। २, १०। ६। १०, ९। १६, आपस्तम्भ श्रौत सूत्र ६। १८। १, शांखायन गृह्य सूत्र २। ५। १२, ७। १९, ६। ४। ८, कौशीतकी सूत्र ९१। ६, खगटा गृह्य सूत्र २। ४। २१, आपस्तम्भ गृह्य सूत्र २। ४। २१, बोधायन ध० शा० २। १०। १७। १४, मान०ध०शा० २। ७७, ऋग्विवधान १। १२। ५, मान० गृ० सू० १। २। ३, ४। ४। ८, ५। २॥

भाष्य रामनाथ वेदालंकर सामवेद

ऋचा में तीन पाद है। प्रत्येक वेद से एक एक पाद दुहा गया है (मनु २। ७७) मनु के इस वचन के आधार पर प्रत्येक पाद का पृथक अर्थ देखते हैं। (सवितु) सकल जगत की उत्पति करनेवाला, सब शुभ गुणों के प्रेरक परमात्मा का (तत्) वह प्रसिद्ध तेज (वरेण्यम्) है। २(देवस्य) दाता, प्रकाशमान और प्रकाशक उस परमात्मा के (भर्गः) तेज को, हम (धीमहि) धारण करें वा ध्यावें। ३ (यः) जो सविता प्रभु (नः) हमारे (धियः) प्रज्ञाओं और कर्मों को (प्रचोदयात) सन्मार्ग प्रेरित करे॥

भावार्थः सकल जगत के स्रष्टा, सूर्य के समान सबके अन्तःकरण को प्रकाशित करने वाले, सर्वान्तर्यामी परमेश्वर के तेजों के ध्यान और धारण करने से वह उपासक की बुद्धियों और क्रियाओं को सन्मार्ग में प्रेरित करके उसे सुखी करता है।

भाष्य श्री राम शर्मा आचार्य सामवेद

जो हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हैं, उन सविता देव के वरण करने योग्य तेज को हम धारण करते हैं।

भाष्य श्री राम शर्मा आचार्य यजुर्वेद ३.३५

सम्पूर्ण जगत् के जन्मदाता सविता (सूर्य) देवता की उत्कृष्ट ज्योति का हम ध्यान करते हैं, जो (तेज सभी सत्कर्मों को सम्पादित करने के लिए) हमारी बुद्धि को प्रेरित करता है॥

भाष्य श्री राम शर्मा आचार्य यजुर्वेद २२.९

सर्वप्रेरक, पापनाशक, वरण करने योग्य, देव (सत् चित् आनन्द) स्वरूप, सविता देव को हम धारण करते हैं वे (उत्पादक प्रेरक देव) हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर चलने (श्रेष्ठ कर्म करने) की प्रेरणा प्रदान करें॥

भाष्य श्री राम शर्मा आचार्य यजुर्वेद ३०.२

हम उन प्रेरक सविता के तेज को धारण करते हैं जो हमारी बुद्धि (कर्म) को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे॥

भाष्य श्री राम शर्मा आचार्य यजुर्वेद ३६.३

उस प्राण स्वरूप, दुःख नाशक, सुख स्वरूप, प्रकाशवान, श्रेष्ठ, तेजस्वी, देवत्व प्रदान करने वाले परमात्मा का हम ध्यान करते हैं, जो (वह) हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे॥

भाष्य श्री राम शर्मा आचार्य ऋग्वेद ३.६२.१०

जो हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हैं उन सविता देवता के वरण करने योग्य, विकारनाशक, दिव्यता प्रदान करने वाले तेज को हम धारण करते हैं॥

भाष्य पण्डित राम गोविन्द त्रिवेदी ऋग्वेद ३.०६२.१०

जो सविता हमारी बुद्धियों को प्रेरित करता है, सम्पूर्ण श्रुतियों में प्रसिद्ध उस द्योतमन जगत् सृष्टा परमेश्वर के संभजनीय परब्रह्मात्मक तेज का हम लोग ध्यान करते हैं।

भाष्य महर्षि दयानन्द ऋग्वेद ३.६२.१०

हे मनुष्यो! सब हम लोग (यः) जो (नः) हम लोगों की (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) उत्तम गुणकर्म और स्वभावों में प्रेरित करे उस (सवितुः) सम्पूर्ण संसार के उत्पन्न करनेवाले और सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य से युक्त स्वामी और (देवस्य) सम्पूर्ण ऐश्वर्य के

दाता प्रकाशमान सबके प्रकाश करनेवाले सर्वत्र व्यापक अन्तर्यामी के (तत्) उस (वरेरयम्) सबसे उत्तम प्राप्त होने योग्य (भर्गः) पापरूप दुःखों के मूल को नष्ट करनेवाले प्रभाव को (धीमहि) धारण करें॥

भाष्य महर्षि दयानन्द यजुर्वेद ३.३५

हम लोग (सवितुः) सब जगत् के उत्पन्न करने वा (देवस्य) प्रकाशमय शुद्ध वा सुख देने वाले परमेश्वर का जो (वरेरयम्) अति श्रेष्ठ (भर्गः) पापरूप दुःखों के मूल को नष्ट करने वाला तेजःस्वरूप है (तत्) उसको (धीमहि) धारण करें और (यः) जो अन्तर्यामी सब सुखों का देने वाला है, वह अपनी करूणा करके (नः) हम लोगों की (धियः) बुद्धियों को उत्तम उत्तम गुण, कर्म, स्वभावों में (प्रचोदयात) प्रेरणा करे॥

भावार्थ मनुष्यों को अत्यन्त उचित है कि इस सब जगत् के उत्पन्न करने वा सब से उत्तम सब दोषों के नाश करने तथा अत्यन्त शुद्ध परमेश्वर ही की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करे। किस प्रयोजन के लिये, जिससे वह धारण व प्रार्थना किया हुआ हम लोगों को खोटे खोटे गुण कर्मों से अलग करके अच्छे अच्छे गुण, कर्म और स्वभावों में प्रवृत्त करे, इसलिए प्रार्थना का मुख्य सिद्धान्त यही है कि जैसी प्रार्थना करनी, वैसा ही पुरुषार्थ से कर्म का आचरण करना चाहिये॥

भाष्य महर्षि दयानन्द यजुर्वेद २२।९

हे मनुष्यों! (सवितुः) समस्त संसार को उत्पन्न करने हारे (देवस्य) आप से आप ही प्रकाशस्वरूप सबके चाहने योग्य समस्त सुखों के देने हारे परमेश्वर के जिस (वरेरयम्) स्वीकार करने योग्य अति उत्तम (भर्गः) समस्त दोषों के दाह करने वाले तेजोमय शुद्धस्वरूप को हम लोग (धीमहि) धारण करते हैं, (तत्) उसको तुम लोग धारण करो (यः) जो (नः) हम सब लोगों की (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरे अर्थात उनको अच्छे अच्छे कामों में लगावे, वह अन्तर्यामी परमात्मा सबके उपासना करने योग्य है।

भाष्य महर्षि दयानन्द यजुर्वेद ३०।२

हे मनुष्यों! (यः) जो (नः) हमारी (धियः) बुद्धि वा कर्मों को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे, उस (सवितुः) समग्र जगत् के उत्पादक सब ऐश्वर्य तथा (देवस्य) सुख के देनेहारे ईश्वर के जो (वरेरयम्) ग्रहण करने योग्य अत्युत्तम (भर्गः) जिस से दुःखों का नाश हो, उस शुद्ध स्वरूप को जैसे हम लोग (धीमहि) धारण करें वैसे (तत्) ईश्वर के शुद्ध स्वरूप को तुम लोग भी धारण करो॥

भाष्य महर्षि दयानन्द यजुर्वेद ३६।३

हे मनुष्यों! जैसे हम लोग (भूः) कर्मकाराड की विद्या (भुवः) उपासना काराड की विद्या और (स्वः) ज्ञान काराड की विद्या को संग्रहपूर्वक पढ़ के (यः) जो (नः) हमारी (धियः) धारणावती बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे, उस (देवस्य) कामना के योग्य (सवितुः) समस्त ऐश्वर्य के देने वाले परमेश्वर के (तत्) उस इन्द्रियों से न ग्रहण करने योग्य परोक्ष (वरेरयम्) स्वीकार करने योग्य (भर्गः) सब दुःखों के नाशक तेजःस्वरूप का (धीमहि) ध्यान करें, वैसे तुम लोग भी इसका ध्यान करो॥

भाष्य जयदेव शर्मा सामवेद

(वरेरय) सर्वोत्कृष्ट, वरण करने योग्य अनुपम, (भर्गः) अविद्या, अज्ञान, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि अज्ञान से पैदा होने हारे तामस अंकुरों को अग्नि और सूर्य के प्रखर तेज के समान भस्म कर डालने हारे तेज का हम (धीमहि) ध्यान करें, धारण करे। (यः) जो परमेश्वर (न) हमारी (धियः) बुद्धियों और कर्म वृत्तियों को (प्रचोदयात्) उत्तम सन्मार्ग को प्रेरित करता है।

श्लोक

वेदाश्छन्दांसि सवितुर्वरेरयं भर्गो देवस्य कवयोऽन्नमाहुः कर्माणि धियस्तदु ते ब्रवीमि प्रचोदयात्सविता याभिरेतीति॥ गो पथ ब्राह्मण १.१.३२॥

उस उत्पादक परमात्मा देव का परम वरणीय भर्गरूप तेज वेद छन्द है जिसको कवि विद्वान लोग अन्न कहते हैं। और धिय का तात्पर्य कर्म है, हे शिष्य यही मैं तुझको उपदेश करता हूं कि उन कर्मों द्वारा ही परमात्मा सबको प्रेरित करता है।

भाष्य जयदेव शर्मा ऋग्वेद

(यः) जो परमेश्वर (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) अच्छी प्रकार उत्तम मार्ग में प्रेरणा करता है (सवितुः) सर्वोत्पादक

उस (देवस्य) प्रकाशस्वरूप, सर्वप्रकाशक, सर्वदाता, परमेश्वर के (तत्) उस अनुपम (वरेण्यम्) सर्वश्रेष्ठ (भर्गः) पापों को भून डालने वाले, समस्त कर्म बन्धनों को भस्म करने वाले तेज को (धीमहि) धारण करें और उसी का ध्यान करें।

जो (नः) हमारे (धियः) समस्त कर्मों को सञ्चालित करता उस सर्वप्रेरक देव, दानशील सूर्यवत् तेजस्वी पुरुष के उस सर्व शत्रुतापक तेज और प्रजा भृत्यादि पालक (भर्गः) अन्न को (धीमहि) धारण करें।

भाष्य जयदेव शर्मा यजुर्वेद ३। ३५

राजा के पक्ष में

(सवितुः) समस्त देवों के प्रसविता उत्पादक और उत्कृष्ट शासक, आज्ञापक, प्रेरक, (देवस्य) विजेता महाराज के (तत्) उस (वरेण्यम्) अति श्रेष्ठ (भर्गः) पाप के भूने डालने वाले तेज को हम सदा (धीमहि) धारण करें, सदा अपने ध्यान में रक्खें। (यः) जो (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को समस्त कार्य व्यवहारों को (प्रचोदयात्) उत्तम मार्ग पर संचालित करता है।

ईश्वर के पक्ष में

समस्त जगत् के उत्पादक और संचालक उस देव परमेश्वर के सर्वश्रेष्ठ, पाप नाशक तेज को हम धारण करें। (यः नः प्रचोदयात्) जो हमे सन्मार्ग में हमे सदा प्रेरित करे।

भाष्य जयदेव शर्मा यजुर्वेद ३०। २

(सवितुः देवस्य) सर्वोत्पादक सर्वप्रेरक और सब के प्रकाशक प्रभु, परमेश्वर के (वरेण्यम्) सर्वश्रेष्ठ पद को प्राप्त करने वाले, एवं सबों को वरण करने योग्य, सर्वोत्तम (भर्गः) पापों को भून डालने वाले तेज का (धीमहि) हम ध्यान करते हैं। (यः) जो (नः) हमारे (धियः) बुद्धियों, कर्मों और स्तुति वाणियों को (प्रचोदयात्) उत्तम मार्ग में प्रेरित करें॥

शृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज

क्योंकि वे परमपिता परमात्मा वरणीय माने जाते हैं, प्रत्येक संसार का प्राणी मात्र, उसी परमिपता परमात्मा को अपना वरणीय स्वीकार करता रहा है और करता रहता है क्योंकि उसका वरण करने के पश्चात् मानव को द्वितीय वरण की आवश्यकता नही होती। क्योंकि वह अखण्ड है, गति देने वाला है, इस संसार का वह संचालन कर रहा है, तो वह जो मेरा देव जो संचालन करने वाला है, आज हम उस अपने महामना प्रभु की प्रतिभा का वर्णन करते चले जाएं। मेरे प्यारे प्रभु ने यह संसार मानो एक रचनामयी दृष्टिपात आता रहता है और उसी के कारण ये भिन्न भिन्न रूपों में ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आता है। आज मैं तुम्हे उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूं, जिस क्षेत्र में ऋषि मुनि बेटा! अपना अध्ययन करते रहे हैं, और उनका जो अध्ययन की जो शैली है वह बड़ी विचित्र रही है, एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके, प्रत्येक वस्तु के ऊपर उनका चिन्तन होता रहा और चिन्तन मानो बाह्य जगत में, आन्तरिक जगत में, दोनों जगतों में बेटा! उनकी आभा निहित रही है और उनका क्रियाकलाप महामना देव की आभा में उसके नियन्त्रण में कार्य होता रहा, उनके विचारों में किसी भी प्रकार की विकृतता नही होती, उनके विचारों में एक स्थिरता रहती है और वही स्थिरता मानो समाज को, मानव को ऊँचा बना देती है।

मानव के जीवन में परमपिता परमामा वरण करने योग्य है, जो मानव उसका वरण कर लेता है, वह मानव अमरावती को प्राप्त हो जाता है। आओ! आज हम परमपिता परमामा का और अपने मध्य में जो नाना सन्धियां हैं उन सन्धियों को हम एक सूत्र में लाना चाहते हैं परन्तु वह नाना सन्धियां क्या हैं? वह जो नाना प्रकार की जो प्रकृति की अमूल्य तरंगें हैं अथवा मूल में मन में विराजमान रहती हैं, उन मूल तरंगों को हम अपने मध्य से दूरी करते हुए ज्ञान और विवेक के द्वारा व्यापक बनाते हुए और उसको आंकुचन करते हुए अथवा अपने मध्य में वह जो प्रभु का परम, सुखद, आनन्द कहलाया जाता है। उस आनन्द को प्राप्त करने के लिए हम नाना प्रकार की जो हम सीमाओं में परिणत रहते हैं। उन सीमाओं से हमें उत्तीर्ण होना है, उन्हें अपने से दूर करना है जिससे हमारे जीवन में महत्ता की तरंगें ओत प्रोत हो जाएं। बेटा! हमारे यहाँ ऋषिजन विद्यमान होकर के अपना अपना चिन्तन करते रहते थे। और उनके जो चिन्तन करने का क्रम विचित्र और महान माना जाता

है। वे यह कहा करते हैं कि चिन्तन करने से ऐसा प्रतीत होता है कि परमपिता परमामा वरणीय है। उसको अपने आप वरण करना चाहिए। अपने में धारण कर लेना चाहिए। प्रतयेक मानव संसार में यह उत्सुकता में लगा हुआ रहता है कि मेरे जीवन में आनन्द की तरंगें ओत प्रोत हो जाएँ। तरंगे मानव को कैसे प्राप्त होती हैं? आनन्द उस काल में प्राप्त होता है जब आनन्द स्वरूप को अपने में धारण कर लेते हैं। मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूं। केवल उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूं जहाँ ऋषि मुनि विद्यमान हो करके अपना चिन्तन करते रहे हैं। अपने को वरण करते रहे हैं। वैदिक साहित्य में नाना प्रकार का विचार धारायें मानव के हृदयों में निहित रही हैं। मानव का हृदय उसे आलिंगन करता रहा है और अपने में उसे धारण करने की आकांक्षा बनी रहती है। आओ मुनिवरों! आज मैं तुम्हे दार्शनिकों के क्षेत्र में ले जाना चाहता हूं। जहाँ दार्शनिकों ने इस सम्बन्ध में नाना प्रकार की उड़ान उड़ने का प्रयास किया। वह मेरा देव कितना अनुपम है, वह कितना वरणीय है। उसी मानव को मानवता प्राप्त होती है, जो उसे वर लेता है। उसी को वह प्राप्त होने लगता है। इसीलिए हमारे ऋषि मुनियों ने कहा है, उस परमपिता परमामा को हमें वर लेना चाहिए। जो मानव उसे वर लेता है अथवा उसका वरण कर लेता है, वह उसी के समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। इसीलिए आचार्यो ने कहा है कि उस परमपिता परमामा को वरण कर लेना चाहिए। जिस प्रकार यज्ञशाला में यज्ञमान अपने पुरोहित को वरण कर लेता है, ब्रह्मा को वरण करता है, जब वह उसे वर लेता है तो उसका याग सम्पन्न हो जाता है। इसी प्रकार हे मानव! तू अपने आन्तरिक याग को ऊँचा बनाना चाहता है, उसको पूर्ण रुपेण दृष्टिपात करना चाहता है, तो तू अपने प्रभु का वरण कर लें और उसको वरण करके अपने अन्तर्हृदय रूपी गुफा में उसको स्थिर कर ले। जब हृदय रूपी गुफा में उस परमपिता परमामा को तुम दृष्टिपात कर लोगे तो बेटा! उसे अपना स्वामित्व वरणत्व को प्रदान करते हो, तो तुम आत्म याग को पूर्ण कर सकोगे। जैसे मानव बाह्य यज्ञशाला में अग्न्याधान करता है, मानव उसी प्रकार अपने हृदय में, अन्तर्गुफा में ज्ञान रूपी अग्नि को जागरुक कर लेता है। जब वह ज्ञान रुपी अग्नि जागरुक हो जाती है तो यह जो नाना होता इस मानव शरीर में है यह नाना प्रकार के साकल्य के द्वारा यज्ञशाला में हूत करने लगते हैं, देवता प्रसन्न हो जाते हैं। वे पाँचों ज्योतियाँ जागृत हो जाती हैं। इन ज्योतियों को हम जागरूक करना चाहते हैं। वे पांच अग्नि भी कहलाती है। बाह्य जगत् में पाँच प्रकार के यागों का चयन होता रहता है। आन्तरिक जगत में पांच प्रकार की अग्नियों का स्वरुप मानव के समीप आने लगता है। आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है? आज मैं तुम्हे उसी स्थली पर ले जाने के लिये आया हूँ, जिस स्थली पर विद्यमान हो करके मानव अपनी आत्म चर्चा करता है। वह कण्ठ और हृदय चक्र की चर्चा करता है। वह अपना वरणीय विषय बना लेता है। और उसको अपना वरण करके अपने और प्रभु में अन्तर्द्वन्द्व को दृष्टिपात नही करता। वह अनेकता को एकता के सूत्र में कटिबद्ध करने लगता है और जब अनेकता एकता के सूत्र में कटिबद्ध हो जाती है, तो मानव के हृदय में वह पञ्च अग्नि पञ्च ज्योतियां जागरुक हो जाती है। उन पांचों अग्नियों के प्रकाश में नाना सूर्य आ जाएं परन्तु उसकों आच्छादित नहीं कर सकते।

सहिंता पाठ उदात्त अनुदात्त

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

पद पाठ

ओ३म् तत्। सवितुः। वरेण्यम्। भर्गः। देवस्य। धीमहि। धियः। यः। नः। प्रचोदयादिति प्र चोदयात् ॥

व्युत्क्रम पद पाठ

प्रचोदयात्। नः। यः। धियः। धीमहि। देवस्य। भर्गः। वरेण्यम्। सवितुः। तत्॥

क्रम पाठ

ओ३म् तत् सवितुः। सवितुर् वरेण्यं। वरेण्यं भर्गः। भर्गो देवस्य। देवस्य धीमहि। धीमहीति धीमहि ॥

धियो यः। यो नः। नः प्रचोदयात्। प्रचोदयादिति प्र चोदयात् ॥

जटा पाठ

ओ३म् तत् सवितुस् सवितुस् तत् तत् सवितुः। सवितुर् वरेण्यं वरेण्य सवितुस् सवितुर् वरेण्यम्। वरेण्यं भर्गो भर्गो वरेण्यं वरेण्यं भर्गः। भर्गो देवस्य देवस्य भर्गो भर्गो देवस्य। देवस्य धीमहि धीमहि देवस्य देवस्य धीमहि। धीमहीति धीमहि ॥

धियो यो यो धियो धियो यः। यो नो नो यो यो न। नः प्रचोदयात् प्रऽचोदयान्नो नः प्रऽचोदयात्। प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात् ॥

शिखा पाठ

ओ३म् तत्सवितुस् सवितुस् तत् तत्सवितुर्वरेण्यम्। सवितुर्वरेण्यम् वरेण्यम् सवितुस् सवितुर्वरेण्यम् भर्गः। वरेण्यम् भर्गो भर्गो वरेण्यम् वरेण्यम् भर्गो देवस्य। भर्गो देवस्य देवस्य भर्गो भर्गो देवस्य धीमहि। देवस्य धीमहि धीमहि देवस्य देवस्य धीमहि। धीमहीति धीमहि ॥

धियो यो यो धियो धियो यो यो नः। यो नो नो यो यो नो नः प्रऽचोदयात्। नः प्रऽचोदयात् प्रऽचोदयान्नो प्रऽचोदयात् ॥ प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात् ॥

घन पाठ

ओ३म् तत् सवितुस् सवितुस् तत् तत् सवितुर् वरेण्यं वरेण्य सवितुस् तत् तत् सवितुर् वरेण्यम्। सवितुर् वरेण्यं वरेण्य सवितुस् सवितुर् वरेण्यं भर्गो भर्गो वरेण्य सवितुस् सवितुर् वरेण्यं भर्गः। वरेण्यं भर्गो भर्गो वरेण्यं वरेण्यं भर्गो देवस्य देवस्य भर्गो वरेण्यं वरेण्यं भर्गो देवस्य। भर्गो देवस्य देवस्य भर्गो भर्गो देवस्य धीमहि धीमहि देवस्य भर्गो भर्गो देवस्य धीमहि। देवस्य धीमहि धीमहि देवस्य देवस्य धीमहि। धीमहीति धीमहि ॥

धियो यो यो धियो धियो यो नो नो यो धियो धियो यो न। यो नो नो यो यो न प्रचोदयात्प्रचोदयान्नो यो यो न प्रचोदयात्। नः प्रचोदयात् प्रऽचोदयान्नो नः प्रऽचोदयात्। प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात् ॥

पंच सन्धि घन

ओ३म् तत्सवितुः। सवितुस्सवितुः। सवितुस्तत्। तत्तत्। तत्सवितुः ॥ सवितुर्वरेण्यम्। वरेण्यम् वरेण्यम्। वरेण्यम् सवितुः। सवितुस्सवितुः। सवितुर्वरेण्यम् ॥ वरेण्यम् भर्गः। भर्गो भर्गः। भर्गो वरेण्यम्। वरेण्यम् वरेण्यम्। वरेण्यम् भर्गः ॥ भर्गो देवस्य। देवस्य देवस्य। देवस्य भर्गः। भर्गो भर्गः। भर्गो देवस्य ॥ देवस्य धीमहि। धीमहि धीमहि। धीमहि देवस्य। देवस्य देवस्य। देवस्य धीमहि ॥ धीमहीति धीमहि ॥ धियो यः। यो यः। यो धियः। धियो धियः। धियो यः ॥ यो नः। नो नः। नो यः। यो यः। यो नः ॥ नः प्रऽचोदयात्। प्रऽचोदयात् प्रऽचोदयात्। प्रऽचोदयान्नः। नो नः। नः प्रऽचोदयात् ॥ प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात् ॥

पुष्प माला पाठ

ओ३म् तत्सवितुस् सवितुस् तत् तत्सवितुः। इति सवितुस् तत्। सवितुर्वरेण्यम् वरेण्यम् सवितुस् सवितुर्वरेण्यम्। इति वरेण्यम् सवितुः। वरेण्यम् भर्गो भर्गो वरेण्यम् वरेण्यम् भर्गः। इति भर्गो वरेण्यम्। भर्गो देवस्य देवस्य भर्गो भर्गो देवस्य। इति देवस्य भर्गः। देवस्य धीमहि धीमहि देवस्य देवस्य धीमहि। इति धीमहि देवस्य। धीमहीति धीमहि ॥ धियो यो यो धियो धियो यः। इति यो धियः। यो नो नो यो यो नः। इति नो यः। नः प्रऽचोदयात् प्रऽचोदयान्नो प्रऽचोदयात् ॥ प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात्॥

क्रम माला पाठ

ओ३म् तत्सवितु धीमहीति धीमहि। सवितुर्वरेण्यम् धीमहि देवस्य। वरेण्यम् भर्गो देवस्य भर्गः। भर्गो देवस्य भर्गो वरेण्यम्। देवस्य धीमहि वरेण्यम् सवितुः। धीमहीति धीमहि सवितुस्तत्॥ धियो यः प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात्। यो नः प्रऽचोदयान्नः। नः प्रऽचोदयान्नो यः। प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात् यो धियः॥

रेखा पाठ

ओ३म् तत्सवितुः। सवितुस्तत्। तत्सवितुः॥ सवितुर्वरेण्यम् भर्गः। भर्गो वरेण्यम् सवितुः। सवितुर्वरेण्यम्॥ वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धीमहि देवस्य भर्गो वरेण्यम्। वरेण्यम् भर्गः॥ भर्गो देवस्य। देवस्य धीमहि। धीमहीति धीमहि॥ धियो यः। यो धियो। धियो यः। यो नः प्रऽचोदयात्। प्रऽचोदयान्नो यः। नः प्रऽचोदयात्। प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात्॥

रेखा पाठ सर्वस्य मन्त्रस्य

ओ३म् तत्सवितुः। सवितुस्तत्। तत्सवितुः॥ सवितुर्वरेण्यम् भर्गः। भर्गो वरेण्यम् सवितुः। सवितुर्वरेण्यम्॥ वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धीमहि देवस्य भर्गो वरेण्यम्। वरेण्यम् भर्गः॥ भर्गो देवस्य धीमहि धियो यः। यो धियो धीमहि देवस्य भर्गः। भर्गो देवस्य॥ देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रऽचोदयात्। प्रऽचोदयान्नो धियो धीमहि देवस्य। देवस्य धीमहि॥ प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात्॥

ध्वज

ओ३म् तत्सवितुः। प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात्॥ सवितुर्वरेण्यम्। नः प्रऽचोदयात्॥ वरेण्यम् भर्गः। यो नः॥ भर्गो देवस्य। धियो यः॥ देवस्य धीमहि। धीमहीति धीमहि॥ धीमहीति धीमहि। देवस्य धीमहि॥ धियो यः। भर्गो देवस्य॥ यो नः। वरेण्यम् भर्गः॥ नः प्रऽचोदयात्। सवितुर्वरेण्यम्॥ प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात्। तत्सवितुः॥

दण्ड पाठ

ओ३म् तत् सवितुः। सवितुस्तत्॥ तत् सवितुः। सवितु र्वरेण्यम्। वरेण्यम् सवितुस्तत्॥ तत् सवितुः। सवितु र्वरेण्यम्। वरेण्यम् भर्गः। भर्गो वरेण्यम् सवितुस्तत्॥ तत् सवितुः। सवितु र्वरेण्यम्। वरेण्यम् भर्गः। भर्गो देवस्य। देवस्य भर्गो वरेण्यम् सवितुस्तत्॥ तत् सवितुः। सवितु र्वरेण्यम्। वरेण्यम् भर्गः। भर्गो देवस्य। देवस्य धीमहि। धीमहि देवस्य भर्गो वरेण्यम् सवितुस्तत्॥ तत्सवितुः। सवितुर्वरेण्यम्। वरेण्यम् भर्गः। भर्गो देवस्य। देवस्य धीमहि। धीमहीति धीमहि॥ धियो यः। यो धियः॥ धियो यः। यो नः। नो यो धियः॥ धियो यः। यो नः। नः प्रऽचोदयात्। प्रऽचोदयान्नो यो धियः॥ धियो यः। यो नः। नः प्रऽचोदयात्॥ प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात्॥

60.ओ३म् नमः॑ शम्भ॒वाय॑ च। यजुर्वेद १६.४१

सहिंता पाठ उदात्त अनुदात्त

देवता रुद्रा छन्द स्वरडार्षी बृहती स्वर मध्यम।

ओ३म् नमः॑ शम्भ॒वाय॑ च मयोभ॒वाय॑ च॒ नमः॑ शङ्क॒राय॑ च मयस्क॒राय॑ च॒ नमः॑ शि॒वाय॑ च शि॒वत॑राय च॥ यजुर्वेद १६.४१

भाषार्थः जो सुखस्वरूप, संसार के उत्तम सुखों का देनेवाला, कल्याण का कर्त्ता, मोक्षस्वरूप धर्मयुक्त कार्यों को ही करने वाला, अत्यन्त मंगलस्वरूप और धार्मिक मनुष्यों को मोक्ष सुख देनेहारा उसको बारम्बार नमस्कार हो।

पद पाठ

ओ३म् नमः॑। श॒म्भ॒व इति॑ शम्ऽभवे। च॒। म॒यो॒भ॒व इति॑ मयःऽभवे। च॒। नमः॑। श॒ङ्क॒रायेति॑ शम् क॒राय॑। च॒। म॒य॒स्क॒रायेति॑ मयःऽक॒राय॑। च॒। नमः॑। शि॒वाय॑। च॒। शि॒वत॑र॒ा॒येति॑ शि॒व त॒रा॒य॒। च॒ ॥

क्रम पाठ

ओ३म् नमः॑ शं॒भवे। शं॒भवे॑ च। शं॒भ॒व इति॑ शं भवे। च॒ म॒यो॒भवे। म॒यो॒भवे॑ च। म॒यो॒भ॒व इति॑ मयः भवे। च॒ नमः॑। नमः॑ शंक॒राय॑। शं॒क॒राय॑ च। शं॒क॒रायेति॑ शं क॒राय॑। च॒ म॒य॒स्क॒राय॑। म॒य॒स्क॒राय॑ च। म॒य॒स्क॒रायेति॑ मयः क॒राय॑। च॒ नमः॑। नमः॑ शि॒वाय॑। शि॒वाय॑ च। च॒ शि॒वत॑राय। शि॒वत॑राय च ॥ शि॒व॒त॑र॒ायेति॑ शि॒व॒ त॒र॒ा॒य॒ ॥

जटा पाठ

ओ३म् नमश् शम्भवे शम्भवे नमो नमश् शम्भव॒। शम्भवे च च शम्भवे शम्भवे च। शम्भ्व इति शम्ऽभवे। च मयो भवे मयोभवे च च मयोभव॒। मयोभवे च च मयोभवे मयोभवे च। नमो नमश् च मयोभवे मयोभवे च नम। मयोभवे इतिमय भवे। च नमो नमश् च च नमः॑। नमश् शङ्कराय शङ्कराय नमो नमश् शङ्कराय। शङ्कराय च च शङ्कराय शङ्कराय च। शङ्करायेतिशंऽकराय। च मयस्कराय मयस्कराय च च मयस्कराय। मयस्कराय च च मयस्कराय मयस्कराय च। मयस्करायेति मयःऽकराय। च नमो नमश् च च नमः॑। नमश्शिवाय शिवाय नमो नमश्शिवाय। शिवाय च च शिवाय शिवाय च। च॒ शिवतराय शिवतराय च च शिवतराय। शिवतराय च॒ च॒ शिवतराय शिवतराय च॒ ॥ चेति च ॥

घन पाठ

ओ३म् नमश् शम्भवे शम्भवे नमो नमश् शम्भवे च च शम्भवे नमो नमश् शम्भवे च। शम्भवे च च शम्भवे शम्भवे च मयोभवे मयोभवे च शम्भवे शम्भवे च मयोभवे। शम्भ्व इति शम्ऽभवे। च मयो भवे मयोभवे च च मयोभवे च च मयोभवे च च मयोभवे